



समाज जागरण का शंखनाद अवध प्रहरी

वर्ष : 12

अंक : 03

01-15 फरवरी 2026

धर्मनिष्ठ ●

सत रैदास





एकजुट रहे समाज

भा

रतीय संविधान ने जिस लोकतांत्रिक समाज की कल्पना की थी, उसका मूल आधार समानता, सम्मान और अवसर की बराबरी था। परन्तु आज की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ यह संकेत दे रही हैं कि समानता का सिद्धान्त धीरे-धीरे चयनात्मक न्याय में बदलता जा रहा है। विशेष रूप से कुछ जाति समूहों को बार-बार सार्वजनिक विमर्श में दोषी, विशेषाधिकार प्राप्त या सामाजिक बाधा के रूप में प्रस्तुत किया जाना, एक खतरनाक प्रवृत्ति को जन्म दे रहा है।

यह प्रश्न उठाना स्वाभाविक है कि क्या समाज की एकता के नाम पर केवल एक वर्ग को लक्ष्य बनाना न्यायसंगत है? जब किसी विशेष जाति समूह को सामूहिक रूप से जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो यह न केवल सामाजिक सन्तुलन को बिगाड़ता है, बल्कि संविधान द्वारा प्रदत्त समानता के अधिकार को भी कमजोर करता है। एक ओर हिन्दू संगठनों द्वारा समाज में समरसता, एकता और सांस्कृतिक समन्वय का सन्देश दिया जा रहा है। "समाज को जोड़ो" का मंत्र लेकर गाँव-गाँव, मोहल्ला-मोहल्ला सामाजिक सद्भाव की पहल हो रही है। वहीं दूसरी ओर सरकारी स्तर पर ऐसे नये नियम, प्रावधान और वर्गीकरण सामने आ रहे हैं, जो समाज को और अधिक खँचों में बाँटने का कार्य कर रहे हैं। यह विरोधाभास नीति निर्माण की दिशा पर गम्भीर प्रश्न खड़े करता है।

यदि वास्तव में लक्ष्य सामाजिक समानता है, तो नीतियाँ सन्तुलित और निष्पक्ष होनी चाहिये। किसी भी समुदाय को बार-बार कटघरे में खड़ा करना न तो समाधान है और न ही सामाजिक शान्ति का मार्ग। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे समाज में अविश्वास, असन्तोष और वैमनस्य को जन्म देती है।

संविधान का अनुच्छेद 14 प्रत्येक नागरिक को कानून के समक्ष समानता की गारन्टी देता है। अनुच्छेद 15 भेदभाव से सुरक्षा प्रदान करता है। जब नीतिगत निर्णय किसी विशेष सामाजिक वर्ग के प्रति नकारात्मक पूर्वाग्रह के आधार पर बनाये जाते हैं, तो यह इन मूल अधिकारों की भावना के विरुद्ध जाता है। यह भी आवश्यक है कि सामाजिक न्याय का अर्थ प्रतिशोध नहीं, बल्कि सन्तुलन हो। जिन वर्गों को ऐतिहासिक रूप से सहायता की आवश्यकता है, उन्हें समर्थन मिलना चाहिये, लेकिन यह समर्थन किसी अन्य वर्ग की सामाजिक गरिमा को कम करके नहीं दिया जाना चाहिये। सहायता का उद्देश्य सशक्तिकरण होना चाहिये, न कि समाज के भीतर नयी दरारें पैदा करना। समानता की अवधारणा तब कमजोर पड़ जाती है जब वह केवल कागजी घोषणाओं तक सीमित रह जाये। वास्तविक समानता तब स्थापित होती है जब नीति, भाषा और व्यवहार— तीनों स्तरों पर निष्पक्षता दिखायी दे। यदि सरकार और समाज दोनों अलग-अलग दिशा में कार्य करेंगे, तो समरसता का लक्ष्य केवल नारा बनकर रह जायेगा।

आज आवश्यकता है एक समग्र दृष्टिकोण की, जिसमें हर नागरिक को समान अवसर, समान सम्मान और समान सुरक्षा मिले। न कोई स्थायी दोषी बने, न कोई स्थायी पीड़ित। समाज तभी मजबूत होगा जब सभी वर्ग स्वयं को राष्ट्र की प्रगति का सहभागी महसूस करेंगे। निष्कर्षतः समानता का सिद्धान्त किसी एक वर्ग के विरुद्ध प्रयोग का औजार नहीं होना चाहिये। यह समाज को जोड़ने की प्रक्रिया है, तोड़ने की नहीं। जब नीति निर्माण और सामाजिक विमर्श इस सन्तुलन को समझेंगे, तभी भारत वास्तव में संविधान की आत्मा के अनुरूप एक समरस राष्ट्र बन सकेगा। इसके लिये हिन्दू समाज को एकजुट करना पड़ेगा। ●



सम्पादक

शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल

डॉ. अनूप आनन्द

सुरेश सिंह

विवेक राय

मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय

संस्कृति भवन

राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल

avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ दूरभाष +91- 6389500007, 9151522252 से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित।



Scan & Subscribe

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या : 02510210002360

आई एफएससी : UCBA0000251

यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता ₹ 200

12 वर्षीय सदस्यता ₹ 1000

आजीवन सदस्यता ₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

अनुक्रम



धर्मनिष्ठ सन्त रैदास

04



जीवन शुचिता के प्रतीक पं. दीनदयाल उपाध्याय

06



ललिता जयन्ती : शक्ति चेतना का महापर्व

07



समानार्थक हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और....

08



विशिष्ट कार्य करने वालों को मिले पद्म पुरस्कार

09



केन्द्रीय संस्कृत विद्यालय में होगी महाभारत...

10



चौरी-चौरा की घटना और महामना मालवीय जी

11



आधुनिकता ने कोई सुख नहीं दिया बल्कि ...

14



संग्रहालय को भेंट की 233 साल पुरानी...

15

सुभाषित

अधमा: धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमा:!

उत्तमा: मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनं!!

निम्न कोटि के लोगों को मात्र धन की इच्छा रहती है, ऐसे लोगों को सम्मान से मतलब नहीं होता। एक मध्यम कोटि का व्यक्ति धन और सम्मान दोनों की इच्छा करता है। वहीं एक उच्च कोटि के व्यक्ति के सम्मान ही मायने रखता है, सम्मान धन से अधिक मूल्यवान है।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

धर्मनिष्ठ सन्त रैदास

जब-जब आवश्यकता पड़ी हमारे सन्तों-महापुरुषों ने सनातन विरोधियों को मुँहतोड़ उत्तर दिया है। आज जिस तरह देश में मुस्लिम जिहादियों और ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों, जैनियों के मतान्तरण का कुचक्र बड़े पैमाने पर रचा जा रहा है, ठीक ऐसा ही परिदृश्य मध्ययुग में भी था जब देश में सत्तासीन मुगल आक्रान्ता शासक हिन्दू जनता को डरा-



धमकाकर जबरन इस्लाम कबूलने को बाध्य कर रहे थे। जिस तरह आज देशभर का सन्त समाज जबरन मतान्तरण के कुचक्र के विरुद्ध जनजागरण में जुटा हुआ है, ठीक वैसे ही मध्ययुगीन भक्तिकालीन सन्तों-कवियों ने जबरन मतान्तरण के विरुद्ध व्यापक जनजागृति अभियान चलाकर सनातनधर्मियों को न केवल विधर्मी होने से बचाया था, अपितु भय व लालच में इस्लाम कबूल चुके लोगों की बड़ी संख्या में स्वधर्म में वापसी भी करायी थी। जबरन मतान्तरण की इस महाव्याधि के निराकरण का प्रथम श्रेय जिस मध्ययुगीन विभूति को जाता है, वे हैं भक्त शिरोमणि सन्त रैदास। भारत की विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में उन्हें रोईदास, रविदास, रहदास आदि नामों से भी जाना जाता है।

14वीं व 15वीं शताब्दी में दिल्ली की सल्तनत पर लोदी राजवंश का शासन था। बादशाह सिकंदर लोदी के शासनकाल में हिन्दू धर्मावलम्बियों का जीना दूभर था। हिन्दू जनता को धन का प्रलोभन देकर और डरा-धमका कर मतान्तरण कराना आम बात थी। हिन्दू धर्मावलम्बियों पर विभिन्न प्रकार के कर लगाये जा रहे थे। विवाह, पूजा-पाठ,

तीर्थ यात्रा यहाँ तक कि शव-दाह पर जजिया कर लगाया जा रहा था। इन अत्याचारों से देश का हिन्दू समाज त्राहि-त्राहि कर रहा था। हिन्दू परम्पराओं के पालन पर कर वसूली और इस्लाम मानने वालों को छूट देने के पीछे एकमात्र भाव यही था कि हिन्दू धर्मावलम्बी तंग आकर इस्लाम स्वीकार कर लें। अपने गुरु रामानन्द जी की प्रेरणा से सन्त रैदास ने स्वधर्म के रक्षण के लिये उस कठिन संघर्ष के दौर में मुस्लिम शासकों को खुली चुनौती देते हुए सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कर अपने प्रखर जन जागरण द्वारा न केवल हिन्दुओं के मतान्तरण को रोका बल्कि घर वापसी भी करायी।

सन्त रैदास ने सनातन वैदिक धर्म पर गर्व करते हुए कुरान को झूठा बताया और किसी भी परिस्थिति में मतान्तरण न करने की घोषणा की।

**वेद धर्म सबसे बड़ा अनुपम सच्चा ज्ञान।
फिर क्यों छोड़ इसे पढ़ लूँ झूठ कुरआन॥
वेद धर्म छोड़ूँ नहीं कोसिस करो हजार।
तिल-तिल काटो चाहि, गला काटो कटार॥**

सन्त रैदास को मुसलमान बनाने से उनके लाखों भक्त भी मुसलमान बन जायेंगे, ऐसा सोचकर उन पर मुसलमान बनने के लिये अनेक प्रकार के दबाव आये, किन्तु सन्त रैदास की श्रद्धा और निष्ठा को हम अटूट पाते हैं। वे वैदिक धर्म के दार्शनिक पक्ष में अपनी पूर्ण आस्था बराबर रखते हैं। सिकन्दर लोदी ने उनको मुसलमान बनाने के लिये प्रलोभन तथा दबाव दोनों की नीति अपनायी। लोदी द्वारा भेजे गये मुस्लिम सदना पीर ने शास्त्रार्थ करके हिन्दू धर्म की निन्दा की और मुसलमान धर्म की प्रशंसा की। रैदास ने उसकी बातों को सुना, कहा -

**वेद धरम है पूरन धरमा।
वेद अतिरिक्त और सब भरमा॥
वेद वाक्य उत्तम धरम, निर्मल वाका ज्ञान।
यह सच्चा मत छोड़कर, मैं क्यों पढ़ूँ कुरान॥
श्रुति-शास्त्र-स्मृति गाई।
प्राण जाय पर धरम न जाई॥
कुरान बहिश्त न चाहिये, मुझको हूर हजार।**

**वेद धरम त्यागूँ नहीं, जो गल चलै कटार॥
वेद धरम है पूरा धरमा।**

**करि कल्याण मिटावे भरमा।
सत्य सनातन वेद हैं, ज्ञान धर्म मर्याद।
जो ना जाने वेद को, वृथा करे बकवाद।**

सिकन्दर लोदी ने उनको कठोर दण्ड देने की धमकी दी तो उन्होंने निर्भीकता के साथ उसको जवाब देते हुए वैदिक हिन्दू धर्म को पवित्र गंगा के समान कहते हुए इस्लाम की तुलना तालाब से की - मैं नहीं दबूँ बाल गंवारा, गंग त्याग गहूँ ताल किनारा।

**प्राण तजुँ पर धर्म न देखूँ,
तुमसे शाह सत्य कह देखूँ।
चोटी शिखा कबहुँ नहिं त्यागूँ,
वस्त्र समेत देह भल त्यागूँ।
कंठ कृपाण का करौ प्रहारा,
चाहें डुबावो सिन्धु मंझारा॥**

सन्त रैदास की बातों से चिढ़कर सिकन्दर लोदी ने उनको जेल में डाल दिया। लोदी ने कहा कि यदि वे मुसलमान नहीं बनेंगे तो उन्हें कठोर दण्ड दिया जायेगा। जेल में भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें दर्शन दिये और कहा कि धर्मनिष्ठ सेवक ही आपकी रक्षा करेंगे। अगले दिन जब सिकन्दर नमाज पढ़ने गया तो सामने रैदास को खड़ा पाया। उसे चारो दिशाओं में सन्त रैदास के ही दर्शन हुये। यह चमत्कार देखकर सिकन्दर लोदी घबरा गया। लोदी ने तत्काल उनको रिहा कर दिया और माफ़ी माँग ली। इतना ही नहीं जो सदना पीर उन्हें मुसलमान बनाने आया था, वह स्वयं इस्लाम छोड़ हिन्दू बन गया था और सन्त रैदास का शिष्यत्व स्वीकार कर अपना नाम रामदास रख लिया।

भक्ति रस की निर्मल गंगा

मुस्लिम आतंक के उस कठिन काल में भी सन्त रैदास ने सच्ची भक्ति की निर्मल गंगा प्रवाहित कर दी। उन्होंने सैकड़ों भक्ति पदों की रचना की और उन पदों को भाव विभोर होकर वे गाते थे। वे अपने इष्ट को गोविन्द, केशव, राम, कान्हा, बनवारी, कृष्ण मुरारी, दीनदयाल, नरहरि, गोपाल, माधो आदि विविध नामों से सम्बोधित करते हैं।
**राम बिनु जो कछु करिए सब भर्म रे भाई।
ऐसा ध्यान करूँ बनवारी।**

माधो संगति सरनि तुम्हारी
जगजीवन कृष्ण मुरारी।
कान्हां हो जगजीवन मोरा
दीनानाथ दयाल नरहरि॥
रैदास के अभीष्ट राम

रैदास के अभीष्ट राम हैं, सर्वव्यापी राम। उसी भक्ति के सहारे वे जीवन के सारे कार्य कर रहे हैं। उनके सभी कार्य राम को समर्पित हैं। उनका अपना कुछ भी नहीं, जो भी कुछ है वह राम का ही है- राम नाम धन पायौं ताथै,
सहज करूँ व्योहार रे।
राम नाम हम लाद्यौ ताथै,
विष लाद्यौ संसार रे॥
ईश्वरभक्ति में बेचैन भक्त रैदास कहते हैं -
दर्शन देहो राम दर्शन देहो,
दर्शन दीजै राम विलम्ब न कीजे॥
रैदास कहते हैं कि राम के बिना इस जंजाल से मुक्ति कठिन है-
राम बिन संसै गांठि न छूटे।
काम क्रोध मद मोह माया,
इन पंचनि मिलि लूटे।

शैव और वैष्णव का भेद मिटाया

समाज में उन दिनों शैव तथा वैष्णव का भेद भी पर्याप्त था, किन्तु सन्त रैदास के लिये शैव और वैष्णव का भेद मिथ्या है, इस दृष्टि से शैव और वैष्णव भक्ति का मिला-जुला पद, जिसमें कृष्ण, शिव तथा राम तीनों की भक्ति एक साथ वे करते हैं-

गोविन्दे चरनारविन्द सों समाधि लागी।

उर भुवंग भस्म अंग संत न वैरागी॥

जाकै तीन नैन अमृत वैन, शीश जटाधारी।

कोटि कलि ध्यान अल्प, मदन अनन्त कारी॥

जाकै लील चीन्ह अकल ब्रह्म, गलै रुण्डमाला।

प्रेम मगन फिरत नगन, संग सखा बाला॥

ऐसे महेश विकट भेष, अजहु दरस आसा।

कैसे राम मिलूँ तोहि, गावै रैदासा ॥

अपने कार्य को दिया मान

सन्त रविदास जाति से चर्मकार थे लेकिन उन्होंने कभी भी जन्मजाति के कारण अपने आप को हीन नहीं माना। उन्होंने परमार्थ साधना के लिये सत्संगति का महत्व भी स्वीकारा है। वे सत्संग की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उनके आगमन से घर पवित्र हो जाता है। उन्होंने श्रम व कार्य के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की तथा कहा कि अपने जीविका कर्म के प्रति

मीराबाई, झाला रानी और काशी नरेश के गुरु थे सन्त रैदास

सन्त रैदास के समय में भी हिन्दू समाज में समरसता थी। जाति पांति पूछे नहीं कोई, हरि को भजै सो

हरि का होई को लोग स्वीकार करते थे। उस समय एक ओर ब्राह्मण समाज के स्वामी रामानन्द ने धन्ना (जाट), सेना (नाई), रैदास (चर्मकार), कबीर (जुलाहा) को अपना शिष्य बनाया तो दूसरी ओर मेवाड़ के राणा परिवार की कुलवधू मीराबाई, काशी नरेश तथा झाली रानी ने सन्त रैदास को अपना गुरु बनाया। उस समय के समाज में मान्यता थी कि व्यक्ति को बड़ा बनाने का कार्य उसकी ईश्वर-भक्ति, विद्या, कर्मठता, चरित्र, श्रद्धा, उदारता, कर्तव्यपरायणता तथा मानवीय पहलू ही करते हैं,



उसकी जाति नहीं। सन्त रैदास को सम्पूर्ण हिन्दू समाज ने सम्मान दिया। सवर्ण कहे जाने वाले अनगिनत लोग सन्त रैदास के भक्त हो गये। उनके साथ पूरी चर्मकार जाति भी प्रतिष्ठित हुई। रैदास नाम एक उपाधि की तरह बन गया। हिन्दू समाज के अन्दर एक जाति खड़ी हो गयी, जिसने अपने आप को रैदासी कहने में गौरव की अनुभूति की। सन्त कबीर ने सन्तन में रविदास सन्त हैं..... कहकर उनके प्रति श्रद्धा प्रकट की। रैदास कई बार इस बात का उल्लेख किया कि हमारे घर-परिवार के लोग तो अभी भी वाराणसी के आसपास मरे हुए जानवर उठाने का कार्य करते हैं, किन्तु मैं तो प्रभु का दास बनकर प्रभु की भक्ति में ही लगा रहा और उस दासानुदास रैदास को आचार्य, विप्र आदि लोग आकर दण्डवत प्रणाम करते हैं। यह सब प्रभु की भक्ति के प्रसाद से ही सम्भव हुआ है। श्री गुरु ग्रन्थसाहिब में रैदास का यह पद महत्वपूर्ण है- जाकै कुटुम्ब सब ढोर डोवत फिरहिं अजुहँ बनारसी आसापासा।
आचार सहित विप्र करहिं डंडउति तिन तनै रविदासन दासा॥

हीनता का भाव मन में नहीं लाना चाहिये। उनके अनुसार श्रम ईश्वर के समान ही पूजनीय है। सन्त रविदास ने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में भारत भ्रमण करके समाज को उत्थान की नयी

मन संसार की ओर आकृष्ट करने के लिये उनकी शादी करा दी और उन्हें बिना कुछ धन दिये ही परिवार से अलग कर दिया फिर भी रविदासजी अपने पथ से विचलित नहीं हुए। सन्त रविदास



जी पड़ोस में ही अपने लिये एक अलग झोपड़ी बनाकर तत्परता से अपने व्यवसाय का काम करते थे और शेष समय ईश्वर-भजन तथा साधु-सन्तों के सत्संग में व्यतीत करते थे। रैदास अपनी सम्पूर्ण जाति को जातिगत संकोच से निकालते हैं और सभी को राम की शरण की ओर ले चलते हैं। चमड़े के काम को अन्य लोग तो ओछा बतलाते हैं, किन्तु

दिशा दी। वे सामाजिक समरसता के प्रतीक महान सन्त थे। वे मदिरापान तथा नशे आदि के भी घोर विरोधी थे तथा इस पर उपदेश भी दिये हैं। प्रारम्भ से ही रविदास जी बहुत परोपकारी तथा दयालु थे और दूसरों की सहायता करना उनका स्वभाव बन गया था। साधु-सन्तों की सहायता करने में उनको विशेष आनन्द मिलता था। वे उन्हें प्रायः मूल्य लिये बिना जूते भेंट कर दिया करते थे। नौ वर्ष की नन्ही उम्र में ही परमात्मा की भक्ति का इतना गहरा रंग चढ़ गया कि उनके माता-पिता भी चिन्तित हो उठे। उन्होंने उनका

रविदास ने प्रभु के सम्मुख विनम्रता से सब कुछ कहकर इस कार्य को मान दिया है-

मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा।

तुम सरनागति राजा रामचन्द कहि रविदास चमारा॥

आज भारत को तोड़ने के लिए हिन्दू समाज से दलित समाज को अलग करने के लिये राष्ट्र विरोधी ताकतों द्वारा उकसाया जा रहा है। ऐसे में सन्त रैदास का जीवन चरित्र हम सभी के लिये प्रेरणास्रोत है। ❖

जीवन शुचिता के प्रतीक पं. दीनदयाल उपाध्याय

भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था के लिये मार्गदर्शक सिद्धान्तों में दो शब्द हैं। उनमें से एक है 'एकात्म मानववाद' और दूसरा 'अन्योदय' यानी समाज के अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के उत्थान। इन दोनों ही दर्शनों की व्याख्या की थी पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी (जन्म: 25 सितम्बर 1916 – मृत्यु 11 फरवरी 1968) ने। उन्होंने इन दर्शनों की मात्र व्याख्या ही नहीं की थी बल्कि इसे अपने जीवन में आत्मसात कर लिया था। उनके जीवन के कई ऐसे प्रसंग हैं, जिनके माध्यम से वे ऐसे उदाहरण प्रस्तुत कर चुके हैं जो आज भी दूसरों को मार्ग दिखाने का कार्य करते हैं।

मासिक पत्रिका 'राष्ट्रधर्म', साप्ताहिक पत्रिका 'पाञ्चजन्य' और दैनिक समाचारपत्र 'स्वदेश' को प्रकाशित करने का श्रेय पण्डित जी को ही है। उन्होंने इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने का महान कार्य किया। वर्ष 1937 में कानपुर में स्नातक की पढ़ाई के दौरान अपने मित्र बलवन्त महाशब्दे की प्रेरणा से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ने से पहले भी वह अपनी सादगी से जन-जन के हृदय में समा जाते थे।

एक छोटा सा प्रसंग है जिसमें बताया जाता है कि स्नातक की पढ़ाई के समय जब वे धोती-कुर्ता और ठेठ देशी परिधान में महाविद्यालय पहुँचते थे दूसरे छात्र उन्हें पिछड़ा हुआ मानकर परिहास करते थे। यद्यपि वह इसे अपनी कमजोरी नहीं मजबूती मानते रहे। परीक्षा के बाद परिणामों में अव्वल आने पर जब उनकी चर्चा होने लगी तो सबको समझ में आया कि देशी वेश-भूषा में यह एक असाधारण व्यक्तित्व है।

दीनदयाल जी व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में शुचिता का पूरा ध्यान रखते थे। कहा जाता है कि वे संगठन के कार्यों के लिये भी निजी संसाधनों का उपयोग करने से बचते थे, यदि वह अनैतिक या नियमों के विरुद्ध हो। एक प्रसंग है कि एक बार पण्डित दीनदयाल उपाध्याय रेल से यात्रा कर रहे थे। उसी ट्रेन में संघ के द्वितीय सरसंघचालक गुरु गोलवलकर जी भी यात्रा कर रहे थे। गोलवलकर जी जब यह पता चला कि दीनदयालजी भी इसी ट्रेन में हैं तो उन्होंने सूचना भेजकर

उनको अपने पास बुलवा लिया। उपाध्यायजी तुरन्त उनके पास आये और लगभग एक घण्टे तक सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में गुरु गोलवलकरजी के साथ बातचीत करते रहे। उसके बाद वह अगले स्टेशन पर थर्ड क्लास के अपने डिब्बे में वापस चले गये। अपने डिब्बे में वापस जाते समय वे टीटीई के पास गये और बोले, 'श्रीमान मैंने लगभग एक घण्टे तक सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में यात्रा की है, जबकि मेरे पास थर्ड क्लास का टिकट है। नियम के हिसाब से मेरा एक घण्टे का जो भी किराया बनता है, वह आप मेरे से ले लीजिये।' टीटीई आश्चर्य में पड़ गया। सम्भवतः यह उसके जीवन का पहला प्रसंग होगा जब कोई स्वयं अपना चालान कटवाने उसके पास आया हो।

वहीं, वर्ष 1963 में हुए जौनपुर उपचुनाव में दीनदयाल जी को उनके करीबियों ने परामर्श दिया कि वे अपनी जाति को ब्राण्ड की तरह प्रस्तुत कर मतदाताओं को अपनी ओर लाएँ। मगर वह इसके लिये तैयार न हुए। उन्होंने स्पष्ट होकर कहा कि चुनाव में वह हारना पसन्द करेंगे लेकिन जाति के आधार पर समाज से मत नहीं माँगेंगे। उक्त चुनाव में उनकी हार हो गयी। इसके बाद वे अपने चुनाव क्षेत्र के सभी

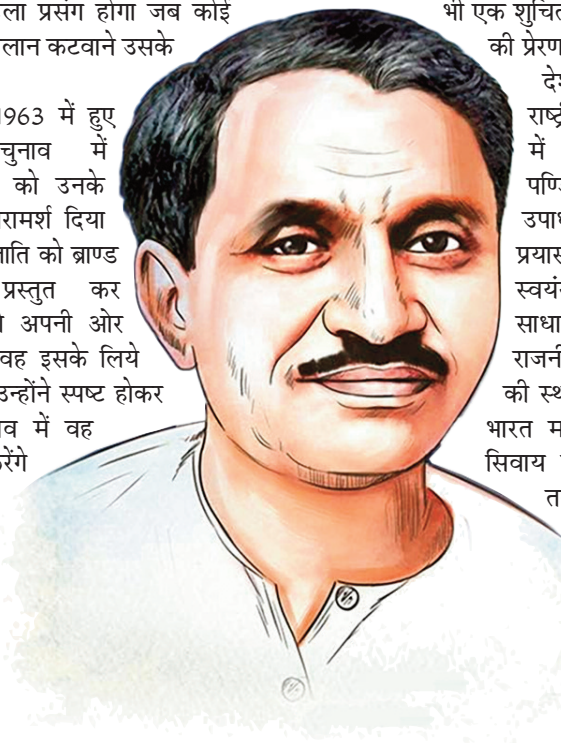
मतदाताओं के द्वार पर पहुँचे। उन्होंने सबसे यही कहा कि चुनाव का परिणाम वह सहर्ष स्वीकारते हैं। मतदाताओं के निर्णय पर उन्होंने कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया। उन्होंने अपने जीवन में केवल एक बार ही चुनाव लड़ा था। इस तरह उन्होंने राजनीति में नैतिकता और आदर्शों से समझौता करते हुए हार को गले का हार बना लिया।

पाञ्चजन्य के सम्पादक रहे यादवराव देशमुख

ने एक संस्मरण लिखा है कि तिब्बत और चीन सरकार के सम्बन्ध में तब के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की नीतिओं से क्षुब्ध होकर यादवराव जी ने एक सम्पादकीय लिखा जिसका शीर्षक दिया 'गजस्तत्र न हन्यते।' उसे पढ़ने के बाद दीनदयाल जी ने उनसे कहा, 'भाई तुम्हारा अग्रलेख बहुत अच्छा रहा है लेकिन उसका शीर्षक तुमने शायद बहुत सोचकर नहीं लिखा। पण्डित नेहरू से हमारा वैचारिक मतभेद होना स्वाभाविक है, पर यह भी याद रखना चाहिये की वे हमारे देश के प्रधानमंत्री हैं। उनकी आलोचना करते समय हल्के शब्दों का प्रयोग करना उचित नहीं होगा।' इस तरह वह उन्होंने राजनीति में भी एक शुचिता को बनाये रखने की प्रेरणा दी।

देशवासियों को राष्ट्रीयता की एक डोर में बाँधने के लिये पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जीवन पर्यन्त प्रयासरत रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में साधारण स्वयंसेवक से राजनीतिक दल जनसंघ की स्थापना तक उन्होंने भारत माता की सेवा के सिवाय कुछ और विचार तक नहीं किया। आरम्भ में उनको जीवन में कई तरह के कष्ट का सामना करना पड़ा। फिर भी स्वनिर्माण का तप

करते रहे। माता-पिता की छाँव से दूर रहते हुए भी उन्होंने अपने चरित्र में भटकाव नहीं आने दिया। वे सतत ईमानदारी और सम्पूर्ण निष्ठा के साथ शिक्षा ग्रहण करते रहे। कुशाग्र बुद्धि और पठनीय लेखनी के धनी दीनदयालजी का जीवन आज भी दूसरों को सादगी से जीते हुए कुछ नया करने की प्रेरणा देता है। वे उच्चकोटि के विचारक, चिन्तक और लेखक होने के साथ ही दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी थे। ♦



ललिता जयन्ती : शक्ति चेतना का महापर्व

भारत की सनातन परम्परा में कुछ पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं होते, बल्कि वे मानव चेतना के उत्थान और आत्मजागरण के अवसर होते हैं। ऐसी ही एक दिव्य तिथि है ललिता जयन्ती, जो माघ मास की पूर्णिमा को मनायी जाती है। यह पर्व माँ श्रीललिता त्रिपुरसुन्दरी के अवतरण और शक्ति तत्व के जागरण का प्रतीक है। ललिता जयन्ती का मूल उद्देश्य केवल पूजा करना नहीं, बल्कि जीवन में सन्तुलन, चेतना और आत्मबल को जाग्रत करना है।

श्री ललिता त्रिपुर सुन्दरी को केवल देवी के रूप में नहीं, बल्कि परब्रह्म की सक्रिय चेतना के रूप में देखा जाता है। वे इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति- इन तीनों का संयुक्त स्वरूप हैं। इसी कारण उन्हें राज राजेश्वरी कहा गया है, अर्थात् वे देवताओं की भी अधिष्ठात्री हैं। श्रीविद्या परम्परा में माँ ललिता को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की संचालन शक्ति माना गया है। उनका स्वरूप सौंदर्य, करुणा और पराक्रम का अद्भुत समन्वय है, जो साधक को भीतर से सशक्त बनाता है।

भण्डासुर का वध

ललिता जयन्ती का एक महत्वपूर्ण पक्ष भण्डासुर वध की कथा से जुड़ा है। यह कथा



केवल पौराणिक युद्ध की कहानी नहीं है, बल्कि मानव के भीतर मौजूद अहंकार, वासना, क्रोध और मोह जैसे विकारों के नाश

श्रीललिता सहस्रनाम पाठ का महत्व

ललिता जयन्ती पर श्रीललिता सहस्रनाम का पाठ विशेष महत्व रखता है। यह केवल स्तुति नहीं, बल्कि मानसिक शान्ति और आत्मिक सन्तुलन का साधन है। मान्यता है कि सहस्रनाम का नियमित और श्रद्धापूर्वक पाठ करने से ग्रह बाधाएँ कम होती हैं, नकारात्मक ऊर्जा का शमन होता है और साधक के जीवन में स्थिरता आती है। यह साधना व्यक्ति को भीतर से शान्त, संयमित और सकारात्मक बनाती है।

का प्रतीक है। भण्डासुर अहंकार का प्रतीक है, और माँ ललिता का उसे पराजित करना यह सन्देश देता है कि वास्तविक युद्ध बाहरी नहीं, बल्कि अपने भीतर की नकारात्मक प्रवृत्तियों से होता है। यही कारण है कि इस पर्व को आत्मशुद्धि और मानसिक परिष्कार का अवसर माना जाता है।

प्रयागराज से जुड़ा महत्व

शक्ति उपासना और तीर्थ परम्परा का गहरा सम्बन्ध प्रयागराज जैसे पवित्र स्थलों से भी जुड़ा है। संगम क्षेत्र को त्रिशक्ति का संगम माना गया है- गंगा इच्छा शक्ति का, यमुना क्रिया शक्ति का और सरस्वती ज्ञान शक्ति का प्रतीक हैं। यही त्रिशक्ति माँ ललिता के स्वरूप में भी विद्यमान है इसीलिये माघ मास में संगम क्षेत्र में की गयी साधना और उपासना विशेष प्रभावशाली मानी जाती है।

ललिता जयन्ती का सामाजिक और सांस्कृतिक सन्देश भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह पर्व नारी शक्ति के सम्मान, करुणा, सन्तुलन और आत्मबल का प्रतीक है। माँ ललिता का स्वरूप यह सिखाता है कि सच्ची शक्ति केवल बाहुबल में नहीं, बल्कि विवेक, करुणा और संयम में होती है। यह पर्व समाज को यह प्रेरणा देता है कि आध्यात्मिक

माघ मास का महत्व

शास्त्रों में माघ मास को अत्यन्त पवित्र और ऊर्जा से भरपूर समय बताया गया है। यह काल सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी के विशेष सन्तुलन का होता है, जिससे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ जाता है। इसी कारण माघ मास में गंगा स्नान, व्रत, दान, जप और साधना को कई गुना फलदायी माना गया है। माघ पूर्णिमा को की गई शक्ति उपासना को विशेष सिद्धिदायक बताया गया है, क्योंकि इस दिन मन और प्रकृति दोनों शुद्धता की अवस्था में होते हैं।

चेतना के साथ सामाजिक जिम्मेदारी का सन्तुलन बनाये रखना आवश्यक है।

आत्मशक्ति के जागरण का अवसर

ललिता जयन्ती केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आत्मशक्ति के जागरण का अवसर है। माघ मास की पवित्रता और माँ ललिता की कृपा मिलकर मानव जीवन में नयी ऊर्जा, नयी दिशा और नया प्रकाश भर देती है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि जब भीतर की शक्ति जागती है, तब जीवन स्वयं उज्ज्वल और सन्तुलित बन जाता है। ❖



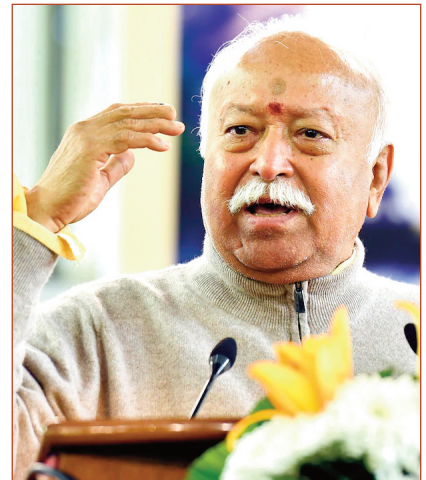
समानार्थक हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और डॉ. हेडगेवार

नयी दिल्ली। जैसे-जैसे संघ नये रूप में विकसित होता है, लोगों को लगता है कि संघ बदल रहा है लेकिन वह बदल नहीं रहा क्रमशः प्रगट हो रहा है। यह बीज से पेड़ बनने की प्रक्रिया है। उन्होंने कहा कि संघ और डॉ. हेडगेवार समानार्थक शब्द हैं। डॉक्टर साहब का जीवन, संघ का विचार व उसकी भावना सब कुछ है।

सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने झण्डेवालान स्थित संघ कार्यालय केशव कुंज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यालय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर शतक फिल्म के दो गीतों “भारत माँ के बच्चे” तथा “भगवा है मेरी पहचान” के लोकार्पण

अवसर पर यह बात कही। इन गीतों को पार्श्वगायक सुखविन्दर सिंह ने आवाज दी है।

डॉ. भागवत ने कहा कि संघ संस्थापक डॉ. केशव राम बलिराम हेडगेवार की साइकोलाजी शोध व अध्ययन का विषय है। उनके माता-पिता एक ही दिन एक घण्टे के अन्तराल में दुनिया से चल बसे। उस समय डॉक्टर साहब की आयु मात्र 11 वर्ष थी। उतनी छोटी आयु में ही इतना बड़ा आघात होने पर व्यक्तित्व का उदासीन हो जाना सामान्य प्रक्रिया है लेकिन इसका उनके मन पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा। वह जन्मजात देशभक्त थे। बड़े से बड़े आघात को झेलकर अपने मन को इधर-उधर नहीं होने देना। यह मजबूत स्वस्थ मन उनका पहले से था।



राष्ट्र निर्माण के लिये घर से बाहर निकलें युवा : होसबाले

प्रयागराज। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने युवाओं से आह्वान किया कि वे राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिये पंच परिवर्तन को

आत्मसात करें। उन्होंने कहा कि भारत को सच्चे अर्थों में पुनः

विश्वगुरु बनाने के लिये युवाओं को घरों से बाहर निकलकर समाज के लिये कार्य करना होगा।



एजेंडे के तहत गढ़ा गया है आर्य नैरेटिव : सरकार्यवाह

नई दिल्ली। जिस देश से आर्य-द्रविड का यह झूठा नैरेटिव निकला अब उस देश के लोगों ने इस सत्य को स्वीकार कर लिया कि आर्य बाहर से नहीं आये लेकिन अपने देश में यह अब भी बना हुआ है। यह उसी तरह है जैसे यह स्थापित करने की भी कोशिश हुई कि भारत एक राष्ट्र नहीं बल्कि राज्यों का समूह है। आर्य को लेकर कई नैरेटिव बनाये गये कि आर्यों ने आक्रमण किया न कि विस्थापित होकर आये। ऐसे कई नैरेटिव गढ़कर लोगों को भ्रमित किया गया। दत्तात्रेय जी विश्व पुस्तक मेले में लेखक व पूर्व राज्यसभा सांसद तरुण विजय की पुस्तक “मंत्र विप्लव” के लोकार्पण अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि यह प्रयास अज्ञानता में नहीं अपितु सुनियोजित तरीके से देश को बाँटने के प्रयासों के तहत हुआ।

सरकार्यवाह ने ये विचार मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में राष्ट्रनिर्माण में युवाओं की भूमिका विषय पर आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि देश हमें सब-कुछ देता है ऐसे में हमें भी देश को कुछ देना सीखना होगा।

यही हर युवा का मूल मंत्र होना चाहिये। उन्होंने कहा कि भारत महान था या नहीं इस बहस से ऊपर उठकर अब हमें यह सोचना है कि भारत को महान कैसे बना सकते हैं? उन्होंने शिक्षा, व्यापार और उद्योग समेत हरक्षेत्र में भारतीयता के दर्शन पर बल दिया।

संस्कारित युवाओं से पुष्ट होती है राष्ट्र निर्माण की नींव

जौनपुर। पूर्वांचल विश्वविद्यालय परिसर में ‘राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका’ विषय पर आयोजित युवा संवाद कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने अपने सम्बोधन में कहा कि राष्ट्र निर्माण की नींव युवाओं के संस्कार, अनुशासन और सतत अभ्यास में निहित है। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद, विज्ञान और योग जैसी भारतीय परंपराएँ मानव

सभ्यता की सबसे प्राचीन धरोहर हैं, जिन्हें आज 21वीं सदी में पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है।

आंबेकर ने आगे कहा कि हजारों वर्ष पुराने हमारे योग की आवश्यकता आज विकसित देशों को भी महसूस हो रही है। यह



भारत की उस सांस्कृतिक चेतना का प्रमाण है, जो सदैव विश्व कल्याण की भावना से प्रेरित रही है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एक अच्छा नागरिक और देश के लिए उपयोगी व्यक्ति बनने की प्रक्रिया बचपन से ही शुरू होती है।

विशिष्ट कार्य करने वालों को मिले पद्म पुरस्कार

लखनऊ। गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रदेश की जानी मानी हस्तियों को वीरता एवं पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया जा रहा है। इस बार शान्तिकाल में दिया जाने वाला सबसे बड़ा वीरता पुरस्कार अशोक चक्र अन्तरराष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन पर जाने वाले लखनऊ के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला को दिया गया। उन्हें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गणतंत्र दिवस समारोह में सम्मानित किया। चिकित्सा व कला क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिये राजधानी लखनऊ की तीन हस्तियों के पद्मश्री से सम्मानित किया जायेगा। इनमें केजीएमयू के रेस्पिरटरी मेडिसिन विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष, टीबी चेस्ट विशेषज्ञ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और राजकीय आयुर्वेद कालेज टुडियागंज के पूर्व प्राचार्य डॉ. केवल कृष्ण ठकराल शामिल हैं। इनके साथ ही लोकप्रिय रंगकर्मी, वैज्ञानिक और फिल्म अभिनेता डॉ. अनिल रस्तोगी को भी सम्मानित किया जायेगा।

इसके अलावा लखनऊ के ही डॉ. बुद्ध रश्मि मणि (एएसआई) रहे और शोधार्थियों के गाइड भी रहे। वहीं वाराणसी की प्रो. एन. राजम जो कि वायलिन वादक हैं, उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया जायेगा। वाराणसी के बीएचयू के प्रोफेसर रहे और कालाजार के लिये दवा बनाने वाले श्याम सुंदरजी को पद्मश्री सम्मानित किया जायेगा। 12 वर्ष की आयु में एसिड अटैक से पीड़ित प्रो. मंगला कपूर को पद्मश्री से सम्मानित किया गया। वहीं पीतल के बर्तनों की नक्काशी संरक्षित करने के लिये मुरादाबाद के चिरंजीवी लाल यादव और मुरादाबाद के ही प्रगतिशील किसान व सब्जियों की लुप्तप्रायः प्रजातियों का संरक्षण करने वाले रघुपत सिंह को भी पद्मश्री से सम्मानित किया जायेगा। गाजीपुर के कृषि वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार सिंह व नोएडा के पैरा एथलीट तथा ऊँची कूद में कई पदक प्राप्त करने वाले प्रवीण कुमार को पद्मश्री से सम्मानित किया जायेगा।

पद्मश्री डॉ. केवल

कृष्ण ठकराल

राजकीय आयुर्वेद कॉलेज टुडियागंज के पूर्व प्राचार्य डॉ. केवल कृष्ण ठकराल को भी पद्मश्री सम्मान के लिये चुना गया



पद्मश्री विशेषज्ञ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 17 फरवरी 1950 को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के मुण्डेवा गाँव में हुआ था। साधारण परिवार से आने वाले डॉ. प्रसाद ने मेहनत और लगन के बल पर चिकित्सा जगत में ऊँचा मुकाम हासिल किया। आज वे देश के बड़े पल्मोनोलॉजिस्ट के रूप में पहचाने जाते हैं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने वर्ष 1974 में केजीएमयू लखनऊ से एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद 1979 में टीबी और चेस्ट रोग में एमडी की उपाधि हासिल की। पढ़ाई के बाद वे केजीएमयू के पल्मोनरी मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष बने और लम्बे समय तक वहाँ सेवाएँ दीं। उन्होंने केजीएमयू की वर्तमान कुलपति डॉ. सोनिया नित्यानन्द को भी पढ़ाया है।



है। चिकित्सकों के परिवार में पले-बढ़े डॉ. ठकराल ने पिता और भाइयों की प्रेरणा से आयुर्वेद को जीवन का लक्ष्य बनाया। उन्होंने वर्ष 1964 में बीएएमएस में दाखिला लिया और लेक्चरर से लेकर प्राचार्य व निदेशक तक का सफर तय किया। वर्ष 1996 में सेवानिवृत्त होने के बाद भी उनका शैक्षणिक और शोध कार्य जारी रहा। उन्होंने 66 शोध पत्र प्रस्तुत किये, जिनमें से कई देश-विदेश की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। शल्य तंत्र और क्षार सूत्र चिकित्सा पर लिखी उनकी पुस्तकें आयुर्वेद जगत में मील का पत्थर मानी जाती हैं। इससे पहले उन्हें आयुर्वेद रत्नाकर, आयुर्वेद बृहस्पति और राष्ट्रीय हर्बल संरक्षण पुरस्कार जैसे कई सम्मान मिल चुके हैं।

मूल रूप से पाकिस्तान के सरगोधा जिले के रहने वाले डॉ. ठकराल का परिवार विभाजन के दौरान भारत आकर यमुनानगर में बस गया था। डॉ. ठकराल ने बताया कि उन्होंने 1964 में लखनऊ और 1968 में बनारस से अपनी शिक्षा पूरी की। वह एमएस (आयुर्वेद) के पहले बैच के टॉपर रहे हैं। उन्होंने अपना जीवन गरीब और श्रमिक वर्ग की सेवा में समर्पित कर दिया है।

डॉ. ठकराल ने आयुर्वेद को एक किफायती और प्रभावी चिकित्सा पद्धति बताया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आयुष (AYUSH) और पारंपरिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह पहल जनहित और राष्ट्रहित में है। उनके अनुसार, “आयुर्वेद एक ऐसी प्रणाली है जो विदेशी मुद्रा पर निर्भर नहीं है और आम

पद्मश्री डॉ. अनिल रस्तोगी

83 वर्षीय डॉ. अनिल रस्तोगी का नाम लखनऊ के सांस्कृतिक परिदृश्य का पर्याय बन चुका है।

सौ से अधिक नाटकों में अभिनय, हजार से ज्यादा मंचन, 75 से अधिक फिल्मों और दर्जनों वेब सीरीज व धारावाहिकों में अपनी छाप छोड़ने वाले डॉ. रस्तोगी ने कला और विज्ञान दोनों क्षेत्रों में समान रूप से योगदान दिया। सीडीआरआई में वैज्ञानिक रहने के साथ-साथ दर्पण नाट्य समूह से जुड़े डॉ. रस्तोगी को लखनऊ बेहद प्रिय है। शहर भी उन्हें उतना ही स्नेह देता है। पद्मश्री की घोषणा से शहरवासियों में उत्सव का माहौल है। डॉ. रस्तोगी को 2017 में यश भारती, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार-2023, पाटलिपुत्र लाइमटाइम अवॉर्ड-2024, अभ्युदय, अतरराष्ट्रीय शलाका सम्मान- 2026 सहित कालिदास सम्मान भी मिल चुका है। पद्मश्री सम्मान से सम्मानित ये तीनों विभूतियाँ न केवल लखनऊ बल्कि पूरे देश के लिये प्रेरणा हैं। उनकी उपलब्धियों ने एक बार फिर साबित किया है कि लखनऊ केवल तहजीब का ही नहीं अपितु प्रतिभा और साधना का भी शहर है।



आदमी के लिये सुलभ है।” ❖

केन्द्रीय संस्कृत विद्यालय में होगी महाभारत की पढ़ाई

लखनऊ। देश में पहली बार किसी विश्वविद्यालय में महाभारत की पढ़ाई प्रारम्भ होगी। केन्द्रीय



संस्कृत विश्वविद्यालय ने महाभारत पर आधारित परास्नातक पाठ्यक्रम तैयार करने की योजना बनायी है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को महाभारत का मूल अध्ययन, चित्र विचित्र कहानियाँ, महाभारत के आयाम आदि के विषय में पढ़ाया जायेगा। यह कोर्स 11 राज्यों में सीएसयू के

13 परिसरों में अगले सत्र से प्रारम्भ होगा। सीएसयू लखनऊ के निदेशक प्रो. सर्वनारायण झा ने बताया कि अभी तक देश में कहीं भी उच्च शिक्षा संस्थान में अभी तक देश में कहीं भी महाभारत की पढ़ाई नहीं कराई जाती। इसके दृष्टिगत सीएसयू परिसर में महाभारत पर कार्यशालाएँ कराने का निर्णय लिया गया है।

विश्व के सबसे बड़े अखण्ड शिवलिंग की स्थापना

मोतिहारी (बिहार)। बिहार के पूर्वी चम्पारण जिले के कल्याणपुर स्थित कैथवलिखा स्वनामधन्य जानकी नगर में निर्माणाधीन विराट



रामायण मन्दिर में विश्व के सबसे बड़े अखण्ड 33 फीट ऊँचे शिवलिंग सहस्रलिंगम की स्थापना हुई। इसे

आकार देने में सात साल का समय लगा। स्थापना के समय देश की विभिन्न नदियों से मँगाये गये जल से शिवलिंग का जलाभिषेक किया गया। शिवलिंग 36 फीट ऊँचे आधार पीठ पर स्थापित है। इस अखण्ड शिवलिंग में ब्रह्मा, विष्णु और शिव के भाग हैं।

नौ वर्षीय बालिका को कंठस्थ है गीता व अन्य ग्रंथ

लखनऊ। त्रिवेणीनगर फेज -2 में विवेक व अंशिका शुक्ला की पुत्री अर्यमा शुक्ला ने अंग्रेजी

माध्यम की छात्रा होने के बाद भी मात्र नौ वर्ष की अवस्था में ही श्रीमद्भगवद्गीता, सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती सहित अनेक स्तोत्र कंठस्थ कर लिये हैं। अर्यमा को संस्कृत धर्म ग्रंथों से गहरा लगाव है। अर्यमा के चाचा सौरभ शुक्ला ने बताया कि उसे महिषासुर मर्दिनी, श्री कनकधारा स्तोत्रम,



श्री विष्णुसहस्रनाम, श्रीराम स्तुति, सरस्वती वन्दना, ओम शिवोहम, शिव रक्षास्तोत्रम, शिव ताण्डव, श्रीरामाष्टकम, कृष्णाष्टकम पूरी तरह स्मरण है। वह जितनी मधुर वाणी में इन मंत्रों व स्तोत्रों का वाचन करती है उतनी ही सुलभता से मधुराष्टकम, श्रीगणेश पंचरत्नम, नवदुर्गा स्तोत्रम, श्रीहरिस्तोत्रम, अष्टलक्ष्मी स्तोत्रम, रूद्राष्टकम, शिवाष्टकम, निर्वाण शतकम, शिव षडक्षर स्तोत्रम आदि का भी पाठ करती है। विशेष बात यह है कि वह इन मंत्रों को बिना पुस्तक देखे सुनाती है। अर्यमा ने वर्ष 2024 में अयोध्या में श्रीरामलला के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा होने तक प्रतिदिन श्रीराम सहस्रनाम और श्रीरामरक्षास्तोत्रम के 11 पाठ का संकल्प लिया था। उसने 11 जनवरी से 22 जनवरी तक बिना पुस्तक देखे 121 बार सम्पूर्ण श्रीराम सहस्रनाम और 121 बार सम्पूर्ण श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ किया।

नैमिष में दो हजार जड़ी-बूटियाँ चिन्हित

सीतापुर। आध्यात्मिक, धार्मिक, पौराणिक तीर्थ नैमिष में औषधियों का भी भण्डार है। क्षेत्र में करीब बीस हजार से अधिक जड़ी बूटियाँ हैं। जिनमें से अब तक दो हजार की ही पहचान हो सकी है। आयुर्वेद व यूनानी चिकित्सा विभाग ने जड़ी बूटियों को चिन्हित कर सूची तैयार करायी है। यह सूची आयुर्वेदिक चिकित्सा पर काम कर रहे शोधार्थियों को भी उपलब्ध करायी गयी है। यहाँ की जड़ी-बूटियों की पहचान कर तीर्थनगरी को प्राकृतिक चिकित्सा के बड़े केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है।

क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी अमित गुप्त ने बताया कि नैमिष के जंगलों में 20 हजार से अधिक जड़ी बूटियाँ होने का अनुमान है। गोमती के किनारे ब्राह्मी, जराकुंश, कुस, बेलझरिया, बेल गिलोय, अडूसा, मूसली बहेड़ा, पुनर्नवा, बावची बहीजासल, ब्रह्मडूकी, निसोव, वच, नरसल, धतूरा, झाड़ी हल्दी, कठ, जामुन आदि जड़ी बूटियाँ पायी जाती हैं। यहाँ का प्राकृतिक वातावरण, प्राकृतिक चिकित्सा के अनुकूल है। जड़ी-बूटियों की पहचान कर वहाँ अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया जा सकता है।



चौरी-चौरा की घटना और महामना मालवीय जी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में चौरी-चौरा घटना एक महत्वपूर्ण पड़ाव है जिसने स्वतन्त्रता आन्दोलन को एक निर्णायक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया।

गाँधी जी ने अंग्रेजों से देश को स्वतंत्र करने के लिये अहिंसा का मार्ग चुना और असहयोग आन्दोलन चलाया। असहयोग आन्दोलन का औपचारिक सूत्रपात 4 सितम्बर 1920 को कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन से हुआ था जिसका उद्देश्य ब्रिटिश वस्तुओं, सेवाओं का बहिष्कार करने के साथ ही ब्रिटिश सरकार के उन सभी नियमों और कानून का शान्तिपूर्ण ढंग से विरोध करना था जो भारतीय जनता का उत्पीड़न करने के उद्देश्य से बनाये गये थे। इस आन्दोलन को श्रमिकों, किसानों तथा मध्यमवर्गीय व्यापारियों और आमजन का भरपूर समर्थन मिल रहा था। अंग्रेज सरकार भी अहिंसक और शान्तिपूर्ण प्रदर्शन तथा तात्कालिक वैश्विक परिस्थितियों के कारण कठोर कार्रवाई करने से पीछे हट रही थी लेकिन अवसर भी ढूँढ़ रही थी कि कैसे दिन प्रतिदिन शक्तिशाली होते आन्दोलन को समाप्त किया जाये। 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में जनरल डायर द्वारा निहत्थे भारतीय जनसमुदाय के नरसंहार की यादें जनमानस में ताजा थीं। स्थान-स्थान पर इस क्रूरतम हत्याकाण्ड का विरोध अंग्रेज हुकूमत को झेलना पड़ रहा था।

गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा गाँव में असहयोग आन्दोलनरत किसानों पर वहाँ तैनात पुलिसवालों ने लाठीचार्ज कर दिया जिससे आन्दोलनकारियों का धैर्य जवाब दे गया और उन्होंने 4 फरवरी 1922 पुलिस थाने में आग



लगा दी जिसमें कई पुलिस वालों की मौत हो गयी और 11 सत्याग्रही भी बलिदान हुए थे।

गाँधी जी ने इस घटना से क्षुब्ध होकर 12 फरवरी 1922 को राष्ट्रीय स्तर पर असहयोग आन्दोलन को तत्काल प्रभाव से वापस लेने की घोषणा कर दी। यद्यपि कांग्रेस के कई नेताओं तथा क्रान्तिकारियों को गांधीजी का यह निर्णय पसन्द नहीं आया। दूसरी ओर, अंग्रेज सरकार जिस अवसर की तलाश में थी वह दमनकारी अवसर उसे प्राप्त हो गया था। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन के पश्चात यह चौरी-चौरा काण्ड श्रमिकों और किसानों का सबसे मुखर विरोध था जिसने अंग्रेज सरकार को हतप्रभ कर दिया था। वह भारतीय जन समुदाय में यह भय बैठाये रखना चाहती थी कि किसी भी प्रकार का विरोध सरकार के प्रति विद्रोह माना जायेगा और उसके लिए कठोरतम दण्ड का विधान किया जायेगा। अतः चौरी-चौरा काण्ड की जाँच एवं विवेचना मनमाने तरीके से पक्षपातपूर्ण ढंग से की गयी। घटना के आरोप में 225 लोग पकड़े गये, उनमें से 172 को मृत्युदण्ड की सजा

सुनायी गयी। जागीरदारों को शक का लाभ देकर उन्हें छोड़ दिया गया।

अंग्रेजों की इस मनमानी ने अहिंसा समर्थक अत्यन्त विनम्र किन्तु स्वराष्ट्र के प्रति दृढ़ समर्पित महामना मदन मोहन मालवीय जी को अत्यन्त उद्वेलित कर दिया। उनका स्पष्ट मत था कि जो अपराध किया ही नहीं गया, उसका दण्ड निर्दोष लोग क्यों भुगतें।

15 साल बाद मालवीय जी ने फिर पहना वकील का गाउन

महामना 15 साल से वकालत छोड़ कर गाउन न पहनने का संकल्प लिया था। वे बनारस में रहकर बीएचयू की स्थापना की तैयारी में लगे रहे।



जब इन सेनानियों को फांसी की सजा सुनाने की जानकारी मिली तो महामना मुकदमा लड़ने को तैयार हो गए। फिर तो हाईकोर्ट में ऐसी बहस हुई कि वह भी इतिहास बन गया।

तीन बार झुककर चीफ जस्टिस ने किया था अभिवादन

तत्कालीन चीफ जस्टिस ग्रीम हुड निर्यस ने बहस के दौरान तीन बार झुककर महामना का अभिवादन भी किया। बहस पूरी हुई तो चीफ जस्टिस ने फैसला तो सुरक्षित कर लिया लेकिन महामना से इतना जरूर कहा कि मुझे नहीं लगता है कि जितनी अच्छी बहस आपने की है, इससे अच्छी बहस हो सकती थी। जब इस बहस का फैसला आया तो उसमें से 151 लोगों को फांसी से बरी कर दिया गया। ❖



लखनऊ सहित सभी जिलों में हिन्दू सम्मेलनों का भव्य आयोजन

लखनऊ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष पूर्ण होने के ऐतिहासिक अवसर पर राजधानी लखनऊ सहित अवध के सभी जिलों में दिव्य व भव्य हिन्दू सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। लखनऊ में संघ दृष्टि से सभी बस्तियों व संघ स्थानों पर हिन्दू सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं।

लखनऊ के ऐशबाग, मालवीय नगर स्थित चित्ताखेड़ा बस्ती में एक भव्य हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया। हिन्दू सम्मेलन में भारी संख्या में मातृशक्ति और हिन्दू समाज के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज में एकता, समाजिक समरसता और संघ के पंच परिवर्तन विषय पर जनजागरण करना था। सम्मेलन की शुरुआत भजन गायक किशोर चतुर्वेदी के गायन से हुई। राष्ट्रवादी कवि प्रख्यात मिश्र व विख्यात मिश्र ने कविता पाठ किया। सम्मेलन में उपस्थित मुख्य वक्ता के रूप में प्रशांत भाटिया ने अपने उद्बोधन में संघ की 100 वर्ष की यात्रा पर प्रकाश डाला और कहा कि संघ का उद्देश्य केवल संगठन का विस्तार नहीं अपितु संगठित समाज का निर्माण है। उन्होंने शताब्दी वर्ष के सन्दर्भ में चलाये जा रहे पंच परिवर्तन सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण स्वदेशी और



नागरिक कर्तव्य को समाज के हर घर तक पहुँचाने का आह्वान किया। सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि सन्त डॉ. चैतन्य कौशिक जी ने धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिये समाज को एकजुट रहने का आशीर्वाद दिया। मातृशक्ति का प्रतिनिधित्व कर रही नीलम लोधी ने राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका को रेखांकित किया। कार्यक्रम के पश्चात सभी उपस्थित जनों ने तहरी भोज ग्रहण किया।

चौक बस्ती लक्ष्मण नगर में विराट हिन्दू सम्मेलन एवं समरसता भोज महन्त धर्मेन्द्र दासजी के आशीर्वाचन व सहप्रान्त कार्यवाह संजय जी का उद्बोधन हुआ। मातृशक्ति के रूप में श्रीमती अलका रस्तोगी जनता गर्ल्स इण्टर कालेज और संघचालक जयप्रकाश मंच पर उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ सुन्दरकाण्ड की सुमधुर

प्रस्तुति से हुआ। शिवाजी शाखा बुद्धेश्वर नगर पश्चिम भाग में हिन्दू सम्मेलन एवं समरसता भोज का आयोजन किया गया। राजा बाजार में भी हिन्दू सम्मेलन का वृहद आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि एकल परिवार के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री माधवेन्द्र जी रहे।

लखनऊ पश्चिम रघुबीर नगर में भी भव्य हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अयोध्या के सन्त राजूदास ने धर्मांतरण व बांग्लादेशी घुसपैठ के कारण बदल रही जनसांख्यिकीय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए हिन्दू समाज से एकजुट रहने का आह्वान किया। कुंडरी रकाबगंज में आयोजित विशाल हिन्दू सम्मेलन को साध्वी निरंजन ज्योति ने सम्बोधित किया। यहाँ का हिन्दू सम्मेलन भी अत्यन्त भव्य रहा।

अब संगठित हुआ हिन्दू, भारत बन रहा विश्व गुरु : कौशल

• घोसियाणा मुहल्ले में हिन्दू सम्मेलन का किया गया आयोजन

लालगंज (रायबरेली)। भारत ही नहीं विश्व का हिन्दू संगठित हुआ है, कहीं कोई बात होती है तो हिन्दू इसका मुँहतोड़ जवाब देता है। हमारी सनातन संस्कृति वैश्विक कल्याण की बात करती है। यह बातें नगर के घोसियाणा मुहल्ले में आयोजित हिन्दू सम्मेलन में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रान्त प्रचारक अवध प्रान्त कौशल ने कही।

उन्होंने कहा कि हमारे देश का गौरवशाली इतिहास रहा है। सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत का धन अंग्रेज लूटकर ब्रिटेन लेकर चले गये। उसका कारण हिन्दू का एकजुट न होना था। भारत देश शिक्षा, चिकित्सा, सामरिक सभी क्षेत्रों में विश्व गुरु था, लेकिन पराधीनता



के काल में हम सब पिछड़ गये। फिर से भारत विश्वगुरु बन रहा है। उन्होंने कहा कि हिन्दुओं को संगठित करने के लिए स्वामी विवेकानन्द को भी 'गर्व से कहो हम हिन्दू हैं' का नारा लगवाना पड़ता था। अब हिन्दू संगठित हुआ है। राष्ट्रीय

स्वयं सेवक संघ 100 वर्षों से हिन्दू को संगठित करने में लगा हुआ है। नवयुग कन्या महाविद्यालय लखनऊ की प्राचार्य व प्रान्त संयोजक महिला समन्वय अवध प्रान्त मंजुला उपाध्याय ने कहा कि जब भी राष्ट्र की प्रतिष्ठा

पर आँच आयी है, भारतीय नारी ने तलवार उठायी है। भारत में माँ काली, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी की पूजा होती है। बीच के कालखण्ड में आक्रान्ताओं ने सामाजिक समरसता को छिन्न-भिन्न करने का काम किया था। उन्होंने कहा कि भारत सहनशील देश है, लेकिन इसका मतलब कायरता नहीं है। बावन मन्दिर अयोध्या धाम से आये सन्त वैदेही वल्लभशरण महाराज ने कहा कि हम तन से तो स्वतंत्र हो गये, लेकिन मन से स्वतंत्र नहीं हो पाये। आक्रान्ताओं ने हमें गुलाम बनाया। तमाम स्थानों के नाम आक्रान्ताओं के नाम पर हैं जिन्हें बदलने की जरूरत है। उन्होंने



कहा कि भगवान राम ने समरसता का पाठ पढ़ाया है। बड़ा मठ डलमऊ के महामण्डलेश्वर देवेन्द्रानन्द गिरि ने सभी से व्यसन त्याग कर

अपने जीवन में सात्विकता लाने, स्वस्थ शरीर के लिये व्यायाम व प्रणायाम करने की सलाह दी।

दुनिया सत्य की नहीं शक्ति की सुनती है : अश्विनी उपाध्याय

तरबगंज, गोण्डा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के ऐतिहासिक अवसर पर तरबगंज विधानसभा क्षेत्र में आयोजित विराट हिन्दू सम्मेलन केवल एक कार्यक्रम नहीं बल्कि हिन्दू समाज के स्वाभिमान चेतना और अपने भविष्य के संरक्षण की चेतावनी का स्पष्ट उद्घोष रहा।

इस महासम्मेलन में पाँच हजार से अधिक संख्या में एकत्रित सनातनी हिन्दुओं ने सहभाग कर यह सिद्ध कर दिया कि हिन्दू समाज अब न बिखरा है न भ्रमित और न ही मौन है। बल्कि वह एकजुट होकर अपनी पहचान और अधिकारों की रक्षा के लिए खड़ा हो चुका है। उन्होंने कहा कि अब दुनिया सत्य की नहीं शक्ति



की सुनती है। इस ऐतिहासिक आयोजन को देश के सर्वोच्च न्यायालय के निर्भीक अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय ने मुख्यवक्ता के रूप में संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिद्धपीठ श्री हनुमान गढ़ी अयोध्याधाम के पूज्य महंत श्री श्री 1008 महामण्डलेश्वर ब्रह्मर्षि डॉ. स्वामी महेश योगी जी ने किया।



धर्म के लिए बलिदान होना सहर्ष स्वीकार : विष्णु देवाचार्य

बहराइच। नगर के सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज माधवपुरी में सकल हिन्दू समाज के तत्वावधान में हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन से किया गया। इस अवसर पर मुख्यवक्ता विभाग प्रचारक कृष्णकुमार जी ने संघ की यात्रा का वर्णन करते हुए बताया कि संघ एक शताब्दी से राष्ट्र की सेवा में समर्पित है। उन्होंने कहा कि संघ के स्वयंसेवक समाज के सभी क्षेत्रों में निरन्तर सक्रिय रहकर माँ भारती का यशोगान कर रहे हैं। उन्होंने वर्तमान समय की आवश्यकता को देखते हुए समाज से पंच परिवर्तन के संकल्पों को आत्मसात करने का आह्वान किया।

अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मर्षि स्वामी श्री विष्णुदेवाचार्य जी महाराज ने सनातन संस्कृति की अपौरुषेय शक्ति का उल्लेख करते हुए समाज में नई चेतना का संचार किया। उन्होंने कहा कि हमें अपने धर्म के लिए बलिदान होना सहर्ष स्वीकार है किंतु किसी भी परिस्थिति में परधर्म का अवलम्बन स्वीकार नहीं। सकल हिन्दू समाज के तत्वावधान में हिन्दू सम्मेलन एवं समरसता भोज का आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र रक्षा के सामूहिक संकल्प और भारत माता की जय के गगनभेदी घोष के साथ सम्पन्न हुआ।

‘संघ का उद्देश्य समाज को जोड़ना’

गोण्डा। जिले के अदम गोण्डवी मैदान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर भव्य विराट हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस विशाल कार्यक्रम में संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख स्वांतं रंजन जी मुख्य अतिथि तथा सुप्रीम कोर्ट की वकील सुबुही खान विशिष्ट अतिथि रहीं। हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख स्वांतं रंजन जी ने संगठन के शताब्दी वर्ष की यात्रा तथा समाज में संघ की भूमिका और भविष्य की दिशा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संघ का उद्देश्य समाज को जोड़ना, राष्ट्र निर्माण में योगदान देना और सांस्कृतिक मूल्यों को मजबूत करना है। उन्होंने स्वयंसेवकों से समाज के हर वर्ग तक पहुँचने और राष्ट्रहित में कार्य करने का आह्वान किया।



कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता सुबुही खान ने कहा कि यह समय लोगों को बाँटने का नहीं बल्कि एकजुट होने का है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी शासन के समय से ही भारत में विभाजन की नीति को बढ़ावा दिया गया और दुर्भाग्यवश आज भी वही मानसिकता अलग-अलग रूपों में सक्रिय है। उन्होंने दावा किया कि वर्तमान समय में सात भारत विरोधी मानसिकताएँ सक्रिय हैं जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से देश को कमजोर करने का प्रयास कर रही हैं। ऐसे में समाज को भाषा, क्षेत्र, जाति और सम्प्रदाय के आधार पर बाँटने से बचना होगा।

आधुनिकता ने कोई सुख नहीं दिया बल्कि अकेला और दुर्बल बनाया : आचार्य मिथिलेशनन्दिनीशरण

आज की आधुनिकता ने हमें अकेला किया है। पुत्र अकेला है, पिता अकेला है, माँ अकेली है। पति और पत्नी भी अकेले-अकेले हैं। दोनों के बैंक अकाउंट अलग हैं। सुख अलग हैं। दुख भी एकांकी हैं। अब तो दोनों के मोबाइल का पासवर्ड एक-दूसरे को पता नहीं है। इसे निजता में दखल माना जा रहा है। इस आधुनिकता ने कोई सुख नहीं दिया है, बल्कि सुख की लिप्सा में अकेला किया है। छोटा किया है। दुर्बल बनाया है। अपने अपने हिस्से का दुख सहने के लिये बाध्य हैं।

सड़क, मकान और तमाम संसाधनों से युक्त नगर से आधुनिकता नहीं होती। यह पहले के समय भी थी। लंका में पूरी नगरी ही सोने की बनी थी। हनुमान जी ने उसे भी फूँकने में संकोच नहीं किया। भौतिक उपादानों से हम जो आधुनिक हुए हैं, यह मानव चेतना के लिये महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि हमारा जीवनबोध बदला है क्या? श्रीराम जिस समय धनुष तोड़ते हैं, राजा जनक सीता जी का हाथ उनके हाथ में देना चाहते हैं, मगर श्रीराम पीछे हट जाते हैं। कहते हैं, वह गुरु की सेवा में हैं। पाणिग्रहण तभी कर सकते हैं, जब उनके पिता दशरथ जी की अनुमति होगी। ये श्रीराम का वह सन्दर्भ है, जिसे आज आत्मसात करना जरूरी है।

जीवनभर कोई सन्तान माता-पिता से पृथक या स्वायत्त नहीं होती। वह इस तर्क के साथ खुद को स्वतंत्र होने का दावा नहीं कर सकती कि वह अब बड़ी हो चुकी है। श्रीराम ने पूरे जीवन में एक बार भी यह नहीं कहा, वह अब समर्थ हो गये हैं और खुद निर्णय ले सकते हैं। जब भी कभी श्रीराम के जीवन का गुण उपस्थित हुआ तो उन्होंने यही



पूरा जीवन कभी किसी पल कुंठित नहीं हुआ। चरित्रवान व्यक्ति कभी पछताता नहीं है। चाहे वह रेशा-रेशा हो जायेक। मनुष्यता अकुंठित भाव से आगे बढ़े और जब भी पलट कर स्वयं को देखे तो अपने होने, अपने करने पर किंचित ग्लानि न करे। यही श्रीराम की पहचान है और यह आती है, राज्य के चरित्र शोधन से, जिसे श्रीराम ने किया है।

अयोध्या उदास, नहीं शान्त है

प्रत्येक पुरी का एक अधिपति होता है और उसका जो चरित्र होता है, वह उस पुरी में परिलक्षित होता है। यही गुण अयोध्या में है।

कहा, यह रघुवंश का गुण है। ये उनके कुल की परम्परा है। महर्षि वेद व्यास के सूत्र से रामराज्य का सूत्र जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि श्रीराम का राज्य मनुष्यता में देवत्व को प्रस्तुत करने वाला था। जिस दिन मानव जाति में देवत्व अवतरित हो गया, रामराज्य स्थापित हो जायेगा। राम का

रामराज्य की संकल्पना है कि कोई राजा नहीं है। कोई आपका अधीक्षक नहीं है। आप ही अपने उद्धारक हैं। आप ही अपने नियामक हैं। रामराज्य मनुष्यों को एक ऐसी व्यवस्था देता है, जिसमें आपको कोई नियंत्रित नहीं करेगा। आप अपने आप चलना सीख लें। यही कारण है कि जब भी हमने किसी आदर्श समाज के बारे में सोचा तो विचारकों ने रामराज्य को आधार बनाया। केवल प्रभु श्रीराम ही ऐसे हैं, जो धनुष लेकर किसी को शासित करने के बजाय सबको अपनी रुचि और समझ के अनुसार सदाचारपूर्वक जीवन जीने की छूट देते हैं।

आस्था से आरोग्य तक : बेलपत्र से बनी हर्बल स्किन क्रीम

लखनऊ। शिवभक्ति में विशेष स्थान रखने वाला बेलपत्र अब केवल पूजा तक सीमित नहीं रहा। ज्योतिर्लिंगों पर अर्पित होने वाला यह पवित्र त्रिदलीय पत्र अब वैज्ञानिक शोध के बाद त्वचा की देखभाल और सौन्दर्य का माध्यम बन गया है। केन्द्रीय औषधीय एवं सुगंध पौधा संस्थान (सीमैप) के वैज्ञानिकों ने बेलपत्र के औषधीय गुणों को आधार बनाकर एक प्रभावी, रसायन-रहित हर्बल स्किन क्रीम विकसित की है, जो त्वचा को नयी दमक देने के साथ पर्यावरण संरक्षण का सन्देश भी देती है।

पूजा के बाद नहीं फेंकना पड़ेगा

सदियों से शिवालयों में अर्पित बेलपत्र पूजा के बाद अक्सर उपेक्षित रह जाता था। कहीं यह सूखकर कचरे में बदल जाता, तो



कहीं नदियों में विसर्जन के कारण प्रदूषण बढ़ाता था। आस्था के इस प्रतीक का यह हाल वैज्ञानिकों को भी सोचने पर मजबूर करता रहा। इसी पृष्ठभूमि में बेलपत्र के पुनः उपयोग और उसके औषधीय महत्व को लेकर शोध की शुरुआत हुई।

मुख्यमंत्री के सुझाव से शुरू हुआ शोध

इस अभिनव शोध को दिशा देने में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सुझाव की अहम भूमिका रही। उन्होंने सीमैप के वैज्ञानिकों को शिव को

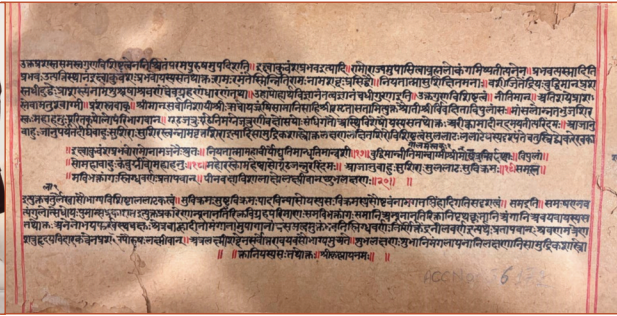
अर्पित होने वाले पवित्र बेलपत्र के औषधीय गुणों पर गम्भीर अध्ययन करने के लिये प्रेरित किया। इसके बाद वैज्ञानिकों की टीम ने बेलपत्र को आधुनिक विज्ञान की कसौटियों पर परखना शुरू किया।

प्रमुख ज्योतिर्लिंगों से लिये बेलपत्र

इस हर्बल स्किन क्रीम के लिए बेलपत्र केवल स्थानीय स्तर पर नहीं, बल्कि देश के प्रमुख शिवधामों से एकत्र किए गए। इनमें उज्जैन का महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर, वाराणसी का काशी विश्वनाथ, महाराष्ट्र का त्र्यम्बकेश्वर और चित्रकूट के प्राचीन शिव मंदिर शामिल हैं। इसके अलावा सीमैप के औषधीय बागान से भी बेलपत्र लिए गए, ताकि तुलनात्मक अध्ययन और शुद्धता सुनिश्चित की जा सके।

संग्रहालय को भेंट की 233 साल पुरानी वाल्मीकि रामायण

नई दिल्ली। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर श्रीनिवास वरखेड़ी ने एक सांस्कृतिक हस्तांतरण के तहत, तीन मूर्ति स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय (पीएमएमएल) की कार्यकारी परिषद के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र को वाल्मीकि रामायण (तत्त्वदीपिका टीका सहित) की 233 वर्ष पुरानी संस्कृत की एक दुर्लभ पांडुलिपि सौंपी।



आदि कवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित और महेश्वर तीर्थ की शास्त्रीय टीका से युक्त यह पांडुलिपि संस्कृत (देवनागरी लिपि) में लिखी गई है। यह विक्रम संवत् 1849 (1792 ईस्वी) की एक ऐतिहासिक महत्व की कृति है।

मुख्यमंत्री ने लांच किया गोदान फिल्म का ट्रेलर



भारतीय संस्कृति में गाय व पंचगव्य के महत्व को लेकर बनी हिंदी फिल्म 'गोदान' देश भर में 6 फरवरी को रिलीज होगी। फिल्म के निर्माता व निर्देशक विनोद चौधरी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भेंट कर फिल्म की विषयवस्तु, उद्देश्य और सामाजिक संदेश के संबंध में जानकारी दी। उनकी उपस्थिति में मुख्यमंत्री ने फिल्म का ट्रेलर लांच किया गया। निर्देशक ने बताया कि फिल्म में गो संरक्षण का संदेश दिया गया है। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री ने गोरक्षा के लिए ठोस काम किया है।

राष्ट्रपति को निमंत्रण दिया

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र की ओर से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०८३ तदनुसार 19 मार्च, 2026 को श्रीराम जन्मभूमि परिसर में आयोजित कार्यक्रम हेतु राष्ट्रपति को निमंत्रण दिया गया।

इस अवसर पर न्यास के महामंत्री चंपत राय, कोषाध्यक्ष स्वामी गोविन्देव गिरी जी, न्यासी कृष्णमोहन तथा निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र उपस्थित थे।



पीठासीन अधिकारियों ने किए प्रभु श्रीरामलला के दर्शन

अयोध्या, 22 जनवरी। देशभर के पीठासीन अधिकारियों ने आज श्री राम जन्मभूमि मन्दिर पहुंचकर प्रभु श्रीराम का दर्शन व पूजन किया। तीर्थ क्षेत्र के महासचिव चम्पतराय ने पीएफसी संवाद कक्ष में श्री राम जन्मभूमि मन्दिर के लिए चले लंबे संघर्ष और निर्माण के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी।



फरवरी माह के उन्नत कृषि कार्य

किसान भाइयों फरवरी माह में खेती किसानी के विभिन्न पहलुओं पर निम्नवत ध्यान देना चाहिये। जैसे फसलोत्पादन -

गेहूँ : बोआई के समय के हिसाब से गेहूँ में दूसरी सिंचाई बोआई के 40-45 दिन बाद तथा तीसरी सिंचाई 60-65 दिन की अवस्था में करनी चाहिये। चौथी सिंचाई बोआई के 80-85 दिन बाद बाली निकलने के समय करनी चाहिये। गेहूँ के खेत में चूहों का प्रकोप होने पर जिक फास्फाइड से बने चारे अथवा एल्यूमिनियम फास्फाइड की टिकिया का प्रयोग करना चाहिये। चूहों की रोकथाम के लिये सामूहिक प्रयास करना अधिक लाभकारी होता है।

जौ : खेत में यदि कण्डुवा रोग से ग्रस्त बाली दिखायी दे तो उसे निकाल कर नष्ट कर देना चाहिये।

चना : चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाव के लिये फूल बनने की अवस्था से ही गंधपाश 6 से 8 प्रति एकड़ की दर से खेत में लगाना चाहिये

तथा 21 दिन के अन्तराल पर सेप्टा बदल देना चाहिये। फली बनना शुरू होते ही आर्थिक क्षति स्तर पर एच0एन0पी0वी0 की 100 से 120

सुण्डी समतुल्य मात्रा को प्रति एकड़ की दर से पानी में घोलकर सायंकाल छिड़काव करना चाहिये अथवा बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी.टी.) 1.0 किग्रा इंडोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत एस.सी. 200 मिलीलीटर अथवा फेनवैलेरेट 20 प्रतिशत ई.सी. 400 मिलीलीटर प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

मटर : मटर में बुकनी रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) रोग की रोकथाम के लिये प्रति एकड़ 800 ग्राम घुलनशील गन्धक या कार्बेन्डाजिम 200 ग्राम या ट्राइडोमार्फ 80 ई.सी. 200 मिलीलीटर की दर से 12-14 दिन के अन्तराल पर पानी में घोलकर दो छिड़काव करना चाहिये।

राई : माहू कीट की रोकथाम के लिये

प्रति एकड़ मिथाइल-ओ- डिमेटान 25 ई.सी. 400 मिलीलीटर या मैलाथियान 50 ई.सी. 400 मिलीलीटर को पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

मक्का : रबी मक्का में तीसरी सिंचाई, बोआयी के 75-80 दिन पर तथा चौथी सिंचाई 105-110 दिन बाद कर देना चाहिये।

बसन्तकालीन मक्का की बोआई पूरे फरवरी माह की जा सकती है।

गन्ना : बसन्तकालीन गन्ने की बोआई देर से काटे गये धान वाले खेत में और तोरियाँ/मटर /आलू की फसल से खाली हुए खेत में की जा सकती हैं। गन्ने की दो कतारों के बीच उर्द या मूँग की दो कतारें अथवा भिण्डी या लोबिया की एक कतार की बोआई की जा सकती है।

हरा चारा : गर्मी में चारे के लिये मक्का, चरी और लोबिया की बोआई माह के दूसरे पखवाड़े से प्रारम्भ की जा सकती है।

सब्जियों की खेती

आलू और टमाटर की फसल को झुलसा रोग से बचाने के लिए फेनोमिडान 10 प्रतिशत एवं मैकोजेब 50

प्रतिशत के संयुक्त फॉर्मूलेशन की 200 ग्राम मात्रा का प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। प्याज में प्रति एकड़ नाइट्रोजन की सम्पूर्ण 40 किग्रा मात्रा का 1/3 भाग (13 किग्रा यूरिया) रोपाई के 30 दिन बाद सिंचाई कर टाप ड्रेसिंग कर देना चाहिये। प्याज को पर्पिल ब्लाच से बचाने के लिये 2.0 ग्राम मैकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू. पी. और यदि थ्रिप्स कीट लगे हों तो 0.6 मिलीलीटर फास्फेमिडान 40 प्रतिशत एस. एल. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। लहसुन में यदि नाइट्रोजन की दूसरी टाप ड्रेसिंग न की हो तो यूरिया की 30 किग्रा मात्रा प्रति एकड़ की दर से बोआई के 60 दिन बाद डालकर सिंचाई कर देना चाहिये। रोग एवं कीट से बचाव

के लिये एक सुरक्षात्मक छिड़काव मैकोजेब 2.0 ग्राम तथा फास्फेमिडान 0.6 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर कर देना चाहिये। लोबिया की बुवाई के लिये इस समय पूसा दो फसली, लोबिया 263 व पूसा फागुनी उपयुक्त किस्में हैं। भिण्डी की बुवाई का उपयुक्त समय है। बोआई से पूर्व भिण्डी के बीज को 24 घण्टे पानी में भिगो देना चाहिये।

बागवानी

आम में खर्रा रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) से बचाव के लिये माह के प्रथम पखवाड़े में घुलनशील गन्धक 80 प्रतिशत डब्लू. पी. 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर) घोल का छिड़काव करना चाहिये। द्वितीय पखवाड़े में कैराथेन या कैलिक्सीन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करना चाहिये। आम में भुनगा कीट के रोकथाम के लिये थाओमेथोक्जाम 1.0 ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड 1.0 मिलीलीटर प्रति 3.0 लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिये।

वानिकी

पापलर के वृक्ष लगाने का उपयुक्त समय है। पौध की रोपाई 5 x 4 मीटर पर करना चाहिये। इसमें 3-4 वर्षों तक खरीफ और रबी दोनों मौसम में फसलें उगाई जा सकती हैं। आगे चलकर केवल रबी में फसल उगानी चाहिये।

पुष्प व सुगन्ध वाले पौधे

गुलदाउदी के सकर्स को अलग करके गमलों में लगा देना चाहिये। गर्मी के फूलों जैसे जीनिया, सनफ्लावर, पोर्चुलाका व कोचिया के बीजों को नर्सरी में बुवाई करनी चाहिये। मेंथा में आवश्यकतानुसार 10-12 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करना तथा बुवाई के 30 दिन बाद निरायी-गुड़ायी कर देना चाहिये।

पशुपालन

पशुओं को निर्धारित मात्रा में दाना तथा मिनरल मिक्स्चर अवश्य देना चाहिये। बरसीम भूसे के साथ मिलाकर देना चाहिये। पशुओं को ठण्ड से बचाना चाहिये तथा ताजा एवं स्वच्छ पानी पीने को देना चाहिये एवं कोई भी समस्या होने पर तत्काल नजदीकी पशु चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिये। ❖

अन्तिम इच्छा

विजयनगर के कुछ व्यक्ति बड़े ही लालची थे। वे हमेशा किसी न किसी बहाने राजा से धन वसूल करते थे। राजा की उदारता का अनुचित लाभ उठाना उनका परम कर्तव्य था। एक दिन राजा कृष्णदेव राय ने उनसे कहा, “मरते समय मेरी माँ ने आम खाने की इच्छा व्यक्त की थी जो उस समय पूरी नहीं की जा सकी थी। क्या अब ऐसा कुछ हो सकता है, जिससे उसकी आत्मा को शान्ति मिले ?”

“महाराज, यदि आप एक सौ आठ जरूरतमंदों को सोने का एक-एक आम भेंट कर दें तो आपकी माँ की आत्मा को अवश्य शान्ति मिल जायेगी। जरूरतमंदों को दिया दान मृतात्मा तक अपने आप पहुँच जाता है।” लोगों ने कहा।

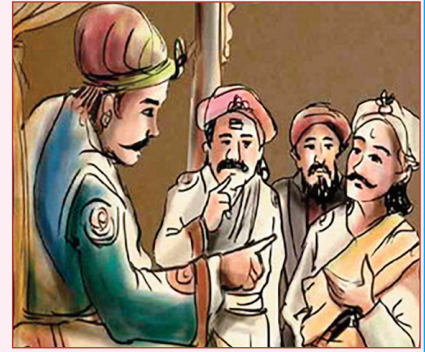
राजा कृष्णदेव राय ने सोने के एक सौ आठ आम उन लोगों को दान कर दिये। लोगों की मौज हो गयी उन आमों को पाकर। एक विद्वान मंत्री के इस लालच पर बहुत क्रोध आया। वह उन्हें सबक सिखाने की ताक में रहने लगा।

जब मंत्री की माँ की मृत्यु हुई तो एक महीने के बाद उसने उन लोगों को अपने घर आने का न्योता दिया कि वह भी माँ की आत्मा की शान्ति के लिये कुछ करना चाहता है।

खाने-पीने और बढ़िया माल पाने के लोभ में एक सौ आठ लोग मंत्री के घर जमा हुए। जब सब आसनों पर बैठ गये तो मंत्री ने दरवाजे बन्द कर लिये और अपने नौकरों से कहा, “जाओ, लोहे की गरम-गरम सलाखें लेकर आओ और इन लोगों के शरीर पर दागो।”

लोगों ने सुना तो उनमें चीख पुकार मच गयी। सब उठकर दरवाजों की ओर भागे, लेकिन नौकरों ने उन्हें पकड़ लिया और एक-एक बार सभी को गरम सलाखें दागी गयीं। बात राजा तक पहुँची। वह स्वयं आये और लोगों को बचाया। क्रोध में उन्होंने पूछा, “यह क्या हरकत है, मंत्री जी ?”

मंत्री ने उत्तर दिया, “महाराज मेरी माँ को जोड़ों के दर्द की बीमारी थी। मरते समय उनको बहुत तेज दर्द था। उन्होंने अन्तिम समय में यह इच्छा प्रकट की थी कि दर्द के



स्थान पर लोहे की गरम सलाखें दागी जायें ताकि वह दर्द से मुक्तिपाकर चैन से प्राण त्याग सकें। उस समय उनकी यह इच्छा पूरी नहीं की जा सकी। इसीलिये लोगों को सलाखें दागनी पड़ीं।” राजा हंस पड़े और लोगों के सिर शर्म से झुक गये।

सिंह सूर्य पुत्र तुम, बड़े चलो

सिंह सूर्य पुत्र तुम, बड़े चलो, बड़े चलो,
राम के सपूत तुम, बड़े चलो, बड़े चलो।।

कलंक कालिमा कटे, उठो प्रखण्ड ज्वार से।
फोड़कर शिला शिला, बहो अखण्ड धार से।
सूर्य-स्वर्ण रश्मियाँ, कब रुकी विहान से।
काट अंधकार उर, कर रही प्रकाश रे।।
अभीत तुम बड़े चलो, प्रतीत तुम बड़े चलो।
राम के सपूत.....

तुम अमृत्य वीर हो, मृत्यु से डरो नहीं।
साहसी महान तुम, भय कभी करो नहीं।।
काल भी समक्ष हो, बांध कर उसे बढ़ो।
पर्वतों को ढेल दो, उठा कदम रुके नहीं।।
मनोज्ञ मातृ भूमि के बड़े चलो, बड़े चलो।।
राम के सपूत.....

शत्रु-मित्र कौन है, मान है जिसे नहीं।
जन्म भूमि कैद है, ज्ञान है किसे नहीं।।
स्वार्थ सिद्धि के लिये, हो रहा विधान है।
ध्वंस कर उसे बढ़ो बस यही विधान है।।
शूर-वीर साहसी, बड़े चलो, बड़े चलो।।
राम के सपूत.....

कोटि पग बढ़ें जिधर, विजय वहाँ खड़ी हुई।
कोटि भुज उठें अगर, मृत्यु भी डरी हुई।।
भुक्ति वक्र कर उठो, मुडियाँ तनी हुई।
हिन्दू राष्ट्र आन-बान शान में सनी हुई।।
नयन में अंगार ले, बड़े चलो, बड़े चलो।।
राम के सपूत.....

बाल-प्रश्नोत्तरी

01. स्वामी रामकृष्ण परमहंस किस

महापुरुष के गुरु थे ?

- (क) स्वामी विवेकानंद
(ख) दयानंद सरस्वती
(ग) ईश्वरचंद विद्यासागर
(घ) महर्षि रमण

02. स्वामी रामकृष्ण परमहंस उपासक थे—

- (क) माँ लक्ष्मी (ख) माँ काली
(ग) भगवान विष्णु (घ) माँ सरस्वती

03. सांख्य दर्शन के प्रणेता थे—

- (क) महर्षि कपिल (ख) महर्षि कणाद
(ग) महर्षि पतंजलि (घ) महर्षि दधीचि

04. निम्न में से कौन सा दर्शन आस्तिक दर्शन नहीं है ?

- (क) योग दर्शन (ख) वैशेषिक
(ग) मीमांसा (घ) चार्वाक

05. महाभारत युद्ध लड़ा गया था —

- (क) सतयुग (ख) कलयुग
(ग) द्वापर (घ) त्रेतायुग

06. द्वापर युग के अंतिम राजा थे -

- (क) परीक्षित (ख) अश्वत्थामा
(ग) युधिष्ठिर (घ) प्रद्युम्न

07. 'मैं कौन हूँ' ग्रन्थ के लेखक हैं ?

- (क) श्रीमाधवराव गोलवलकर 'गुरुजी'
(ख) प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या)
(ग) बालासाहब देवरस
(घ) डॉ. केशवराम बलिराम हेडगेवार

08. भारत में किस ऋतु में सामान्यतः पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं और पेड़ नयी पत्तियों के लिये तैयार होते हैं ?

- (क) ग्रीष्म (ख) शरद
(ग) हेमन्त (घ) शिशिर

09. 'वेद' शब्द का क्या अर्थ है ?

- (क) बुद्धिमान (ख) कुशलता
(ग) ज्ञान (घ) शक्ति

व्रत-पर्व

- | | |
|--|---|
| 01 शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, पुष्य | माघ पूर्णिमा, रविदास जयन्ती, ललिता जयन्ती, माघ स्नान समाप्त |
| 02 कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा, आश्लेषा | |
| 03 कृष्ण पक्ष, द्वितीया, मघा | |
| 04 कृष्ण पक्ष, तृतीया, पूर्वाफाल्गुनी | |
| 05 कृष्ण पक्ष, चतुर्थी, उत्तराफाल्गुनी संकष्टी चतुर्थी | |
| 06 कृष्ण पक्ष, पंचमी, हस्त | |
| 07 कृष्ण पक्ष, षष्ठी, चित्रा | यशोदा जयन्ती |
| 08 कृष्ण पक्ष, सप्तमी, स्वाति | शबरी जयन्ती |
| 09 कृष्ण पक्ष, अष्टमी, विशाखा | कालाष्टमी, विश्व विवाह दिवस |
| 10 कृष्ण पक्ष, अष्टमी/नवमी, विशाखा समर्थ रामदास नवमी | |
| 11 कृष्ण पक्ष, नवमी, अनुराधा | |
| 12 कृष्ण पक्ष, दशमी, ज्येष्ठा | |
| 13 कृष्ण पक्ष, एकादशी, मूल | एकादशी, कुंभ संक्रान्ति |
| 14 कृष्ण पक्ष, द्वादशी, पूर्वाषाढ़ा | |
| 15 कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, उत्तराषाढ़ा | महाशिवरात्रि |



स्मरणीय तिथियाँ

- | | |
|----------------------|---|
| 02 फरवरी (जयन्ती) | चन्द्र भूषण 'रमई काका', कुंवर दिग्विजय सिंह |
| 03 फरवरी (जयन्ती) | राम सिंह (राम सिंह कूका) |
| 04 फरवरी (जयन्ती) | एम. ए. अय्यंगार, भारतरत्न पण्डित भीमसेन जोशी, बिरजू महाराज चौरी-चौरा दिवस |
| 04 फरवरी (पुण्यतिथि) | ताना जी मालुसरे, धर्मवीर हकीकतराय, सतेन्द्रनाथ बोस |
| 05 फरवरी (पुण्यतिथि) | महर्षि महेश योगी |
| 06 फरवरी (जयन्ती) | कवि प्रदीप, (पुण्यतिथि) लता मंगेशकर |
| 07 फरवरी (जयन्ती) | मन्मथनाथ गुप्त, रमाबाई आम्बेडकर |
| 07 फरवरी (पुण्यतिथि) | शचीन्द्रनाथ सान्याल |
| 08 फरवरी (पुण्यतिथि) | कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी |
| 10 फरवरी (पुण्यतिथि) | राजा बख्तावर सिंह, सुदामा पांडेय 'धूमिल' |
| 11 फरवरी (जयन्ती) | तिलका माँझी |
| 11 फरवरी (पुण्यतिथि) | दीनदयाल उपाध्याय, पं. नरेन्द्र शर्मा |
| 12 फरवरी (जयन्ती) | नाना फड़नवीस, दयानंद सरस्वती |
| 12 फरवरी (जयन्ती) | परम हंस बाबा राममंगलदास |
| 12 फरवरी (पुण्यतिथि) | सूफी अंबा प्रसाद भटनागर |
| 13 फरवरी (जयन्ती) | सरोजिनी नायडू, गोपाल प्रसाद व्यास |
| 14 फरवरी (पुण्यतिथि) | विद्यानिवास मिश्र |
| 15 फरवरी (पुण्यतिथि) | सुभद्रा कुमारी चौहान |

पाक्षिक राशिफल



ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी

निदेशक- उत्थान ज्योतिष संस्थान

मेष राशि-

आय एवं रोजगार मुकदमा आदि को लेकर तनाव बढ़ सकता है। भाई बहनों मित्रों के कारण खर्च बढ़ सकता है। जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर खर्च। मानसिक चिन्ता में वृद्धि होगी।

वृषभ राशि-

अति घनिष्ठ पारिवारिक व्यक्ति के कारण उलझन बढ़ेगा। धन संग्रह में अवरोध होगा। अचानक खर्च में वृद्धि हो सकती है। संतान को लेकर थोड़ी चिन्ता बढ़ेगी।

मिथुन राशि-

व्यापारिक विस्तार में वृद्धि होगी। बुद्धि बल के आधार पर धन वृद्धि होगी। अध्ययन अध्यापन में वृद्धि होगी। सुख के संसाधनों में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य में सुधार दिखेगा।



कर्क राशि-

गृह एवं वाहन पर खर्च बढ़ेगा। नींद में अचानक कमी हो सकती है। भाई बहनों के कारण सुख में कमी महसूस हो सकती है। हृदय रोग में वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यक्रम में खर्च।



सिंह राशि-

मित्रों से धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। पुरुषार्थ में वृद्धि होगा। आय नए साधन में वृद्धि किसी मित्र के कारण होगी। कार्यों में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। राजनीतिक एवं कूटनीतिक विचारों में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों में खर्च।



कन्या राशि-

अध्ययन, अध्यापन, वकालत, राजनीति, सेल्स मार्केट के क्षेत्र से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। धन में वृद्धि होगी। धन संग्रह में वृद्धि होगा। सम्मान में वृद्धि होगी।



तुला राशि-

धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी तथा धार्मिक खर्च में वृद्धि होगी। पिता के सहयोग सानिध्य में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य पर अचानक खर्च, भोग विलासिता पर खर्च बढ़ेगा।



वृश्चिक राशि-

मुकदमे आदि को लेकर तनाव बढ़ेगा। यात्रा खर्च में वृद्धि होगी। व्यापारिक कार्यों पर

खर्च बढ़ेगा। अति घनिष्ठ व्यक्ति से तनाव बढ़ेगा। पुराने रोगों से मुक्ति मिलेगी।



धनु राशि-

कार्यक्षेत्र, नौकरी तथा व्यवसाय में उन्नति होगा। बुद्धि के सार्थक प्रयोग से आर्थिक लाभ होगा। जीवनसाथी से लाभ होगा। प्रेम सम्बन्धों में सकारात्मकता आएगी।



मकर राशि-

ससामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा नौकरी एवं व्यवसाय की उन्नति में भाग्य का साथ प्राप्त होगा। गृह एवं वाहन सुख पर वृद्धि होगी। अति घनिष्ठ व्यक्ति के कारण कार्यों में व्यवधान हो सकता है।



कुम्भ राशि-

अन्तरिक्ष डर में वृद्धि होगा। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। अध्ययन अध्यापन में वृद्धि होगी। डिग्री एवं अध्ययन के नये अवसर मिलेंगे। पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। कार्यों में सफलता देर प्राप्त होगी।



मीन राशि-

सुख के संसाधनों को लेकर तनाव बढ़ेगा। जमीन जायदाद को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। पेट की आन्तरिक समस्या के कारण तनाव होगा। पारिवारिक खर्च में वृद्धि होगी। दैनिक आय में अवरोध प्राप्त होगा।

डायबिटीज के मरीज आग तापने से बचें

ठण्ड का मौसम आते ही अलाव, आग या हीटर का सहारा आम बात हो जाती है। सुबह-शाम की ठिठुरन से बचने के लिये लोग आग के पास बैठकर हाथ-पैर सेंकते हैं, लेकिन यही आदत डायबिटीज के मरीजों के लिये गम्भीर स्वास्थ्य समस्या का कारण बन सकती है। खासतौर पर उन मरीजों के लिये खतरा और बढ़ जाता है, जिन्हें डायबिटिक न्यूरोपैथी की शिकायत होती है। लोहिया अस्पताल के मेडिसिन विभाग की वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. रितु करौली के अनुसार डायबिटीज के मरीजों को आग तापने से विशेष रूप से परहेज करना चाहिये, क्योंकि कई बार उन्हें जलने का अहसास ही नहीं होता और यही लापरवाही आगे चलकर घाव, संक्रमण और अल्सर जैसी गम्भीर स्थिति में बदल जाती है।

डायबिटीज एक ऐसी बीमारी है, जो धीरे-धीरे शरीर के कई अंगों को प्रभावित करती है। लम्बे समय तक ब्लड शुगर का स्तर नियंत्रित न रहने पर आँखों, किडनी, दिल और नसों पर बुरा असर पड़ता है। नसों को होने वाले इसी नुकसान को डायबिटिक न्यूरोपैथी कहा जाता है। इसमें सबसे ज्यादा असर पैरों की नसों पर देखने को मिलता है, क्योंकि पैरों तक रक्त संचार अपेक्षाकृत कम होता है। ऐसे में पैरों में दर्द, झनझनाहट, सुन्नपन, जलन या चुभन जैसी समस्याएँ शुरू हो जाती हैं। कई मरीजों में स्थिति इतनी गम्भीर हो जाती है कि उन्हें ठण्ड, गर्मी या चोट का एहसास ही नहीं होता।

डायबिटिक न्यूरोपैथी क्या है?

डायबिटीज के लम्बे समय तक अनियंत्रित रहने पर शरीर की छोटी-छोटी नसे क्षतिग्रस्त होने लगती हैं। नसों को पोषण देने वाली रक्त वाहिकाएँ कमजोर हो जाती हैं, जिससे नसों तक सही मात्रा में ऑक्सीजन और पोषक तत्व नहीं पहुँच पाते। इसका सीधा असर संवेदनाओं पर पड़ता है। मरीजों को पहले हल्की झनझनाहट या सुन्नपन महसूस होता है, फिर धीरे-धीरे दर्द या जलन शुरू हो जाती है। कई बार यह दर्द रात में ज्यादा बढ़ जाता है। कुछ मामलों में नसे इतनी क्षतिग्रस्त हो जाती हैं कि मरीज को किसी भी तरह की गर्मी या ठण्ड



का एहसास नहीं होता। यही स्थिति आग तापने के दौरान सबसे ज्यादा खतरनाक साबित होती है।

क्यों खतरनाक है आग तापना?

डॉ. रितु करौली बताती हैं कि ठण्ड के मौसम में जब डायबिटीज मरीज अलाव या आग के पास बैठते हैं, तो उनके पैर अनजाने में आग के बहुत करीब चले जाते हैं। सामान्य व्यक्ति को जैसे ही ज्यादा गर्मी लगती है, वह तुरन्त पैर हटा लेता है, लेकिन न्यूरोपैथी से ग्रस्त मरीजों को गर्मी या जलन का एहसास ही नहीं होता। ऐसे में पैर धीरे-धीरे जल जाते हैं। कई बार मरीज को तब पता चलता है, जब छाले पड़ जाते हैं या त्वचा जलकर काली पड़ने लगती है। बाद में यही जले हुए स्थान घाव में बदल जाते हैं और समय पर इलाज न होने पर अल्सर का रूप ले लेते हैं। कुछ मरीजों को मामूली जलन लगती है, जिसे वे अनदेखा कर देते हैं, लेकिन डायबिटीज में घाव जल्दी भरता नहीं है।

अल्सर क्यों है इतना खतरनाक?

डायबिटीज के मरीजों में घाव भरने की प्रक्रिया सामान्य लोगों की तुलना में काफी धीमी होती है। ब्लड शुगर ज्यादा रहने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कमजोर हो जाती है। ऐसे में जरा-सा घाव भी जल्दी संक्रमित हो सकता है। जब पैर में अल्सर बन जाता है, तो उसमें बैक्टीरिया पनपने लगते हैं। संक्रमण गहराया तक फैल सकता है और हड्डी तक पहुँच सकता है। कई मामलों में दवाओं से भी सुधार नहीं होता

और सर्जरी की जरूरत पड़ जाती है। स्थिति ज्यादा बिगड़ने पर अंग काटने तक की नौबत आ सकती है।

किन मरीजों में ज्यादा खतरा होता है?

विशेषज्ञों के अनुसार जिन मरीजों को 5 से 10 साल या उससे अधिक समय से डायबिटीज है, उनमें न्यूरोपैथी का खतरा ज्यादा रहता है। इसके अलावा जिनका ब्लड शुगर लम्बे समय तक कन्ट्रोल में नहीं रहा, जो दवाएँ नियमित नहीं लेते या लाइफस्टाइल में लापरवाही बरतते हैं, उनमें यह समस्या जल्दी विकसित हो सकती है। पैरों में लगातार सुन्नपन, झनझनाहट, जलन, दर्द या सेंसिटिविटी कम महसूस होना शुरुआती संकेत हो सकते हैं।

ठण्ड में डायबिटीज मरीज क्या सावधानियाँ अपनायें?

डायबिटीज के मरीजों को आग, अलाव या हीटर के बहुत पास बैठने से बचना चाहिये। अगर हीटर का उपयोग कर रहे हैं, तो उसे सुरक्षित दूरी पर रखें और सीधे पैरों की तरफ न करें। पैरों को हमेशा ढककर रखें, गर्म मोजे पहनें, लेकिन बहुत टाइट मोजों से बचें, क्योंकि इससे रक्त संचार प्रभावित हो सकता है। रोजाना पैरों की जाँच करना बेहद जरूरी है। कहीं कट, छाला, लालिमा, सूजन या जलन तो नहीं है, इस पर ध्यान दें। नंगे पैर चलने से बचें, चाहे घर के अन्दर ही क्यों न हों। अगर कहीं छोटा-सा भी घाव दिखे, तो उसे अनदेखा न करें और तुरन्त डॉक्टर से सम्पर्क करें।

इसके अलावा पैरों की सफाई का भी ध्यान रखें। रोज गुनगुने पानी से पैर धोयें, लेकिन बहुत गर्म पानी का इस्तेमाल न करें। नहाने से पहले पानी का तापमान हाथ से जाँच लें। पैरों को अच्छी तरह सुखाएँ, खासकर उंगलियों के बीच। त्वचा में रूखापन न आये, इसके लिए मॉइस्चराइजर का इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन उंगलियों के बीच क्रीम न लगायें।



अवध में हिन्दू सम्मेलनों की एक झलक

